वाट्सऐप @ 94140-78380, 92140-78380 | वर्ष:6 अंक: 96 गुरुवार 17 सितम्बर 2026 | दैनिक ई-पेपर

शाबाश इंडिया

@ShabaasIndia | प्लॉट नंबर 8, ओझा जी का बाग, गांधी नगर मोड, टोंक रोड, जयपुर

अगस्त तक प्रदेश की राजस्व प्राप्तियां 57 हजार करोड़ रुपये के पार: श्रीनिवास

गत वर्ष की समान अवधि के मुकाबले राजस्व प्राप्तियों में 12.41 प्रतिशत की वृद्धि

मुख्य सचिव वी. श्रीनिवास ने कहा कि चालू वित्तीय वर्ष में अगस्त 2026 तक प्रदेश के प्रमुख राजस्व अर्जक मदों से कुल राजस्व प्राप्तियां 57 हजार 396 करोड़ रुपये रही हैं, जो गत वर्ष की समान अवधि में 51 हजार 61 करोड़ रुपये थीं। इस प्रकार राजस्व प्राप्तियों में 12.41 प्रतिशत की वृद्धि दर्ज की गई है। मुख्य सचिव बुधवार को शासन सचिवालय में प्रमुख राजस्व अर्जक विभागों की राजस्व प्राप्तियों एवं कार्ययोजनाओं की समीक्षा कर रहे थे।

राजस्व लक्ष्यों की नियमित समीक्षा करें, बकाया वसूली और प्रवर्तन पर दें विशेष ध्यान

जयपुर. शाबाश इंडिया

मुख्य सचिव वी. श्रीनिवास ने विभागों को राजस्व वृद्धि की गति बनाए रखने के निर्देश दिए। उन्होंने कहा कि विभाग अपने राजस्व लक्ष्यों की नियमित समीक्षा करें और जहां प्राप्तियां कम हैं, वहां कारणों की पहचान कर सुधार के लिए कार्य योजना बनाएं। उन्होंने बकाया राजस्व की वसूली, प्रभावी प्रवर्तन, लंबित प्रकरणों के समयबद्ध निस्तारण और तकनीक के बेहतर उपयोग पर विशेष ध्यान देने के निर्देश दिए। मुख्य सचिव ने सभी राजस्व अर्जक विभागों को निर्धारित लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए नियमित समीक्षा और प्रभावी कार्ययोजना के साथ काम करने के निर्देश दिए। उन्होंने अवैध खनन पर प्रभावी नियंत्रण और निगरानी व्यवस्था को मजबूत करने पर जोर दिया। ओवरलोडिंग, ओवरस्पीडिंग और परिवहन नियमों के उल्लंघन के विरुद्ध प्रभावी कार्रवाई जारी रखने के निर्देश दिए।

पेट्रोलियम क्षेत्र से 1 हजार 107 करोड़ रुपये की प्राप्ति

बैठक में अतिरिक्त मुख्य सचिव खान एवं पेट्रोलियम अपर्णा अरोड़ा ने बताया कि खान क्षेत्र से अगस्त तक 4 हजार 162 करोड़ रुपये का राजस्व प्राप्त हुआ, जो गत वर्ष की समान अवधि से 20.26 प्रतिशत अधिक है। पेट्रोलियम क्षेत्र से 1 हजार 107 करोड़ रुपये की प्राप्ति हुई। प्रमुख शासन सचिव वित्त वैभव गालरिया ने राज्य की समग्र राजस्व स्थिति और विभागवार प्रगति की जानकारी दी। उन्होंने प्रमुख राजस्व अर्जक विभागों की लक्ष्य के मुकाबले राजस्व प्राप्तियों तथा गत वर्ष की समान अवधि की तुलना में राजस्व वृद्धि से अवगत कराया।

लंबित भूमि आवंटन प्रकरणों के शीघ्र निस्तारण के लिए नियमित समीक्षा की जा रही

प्रमुख शासन सचिव राजस्व टी. रविकांत ने बताया कि लंबित भूमि आवंटन प्रकरणों के शीघ्र निस्तारण के लिए संभागीय आयुक्तों और जिला कलक्टरों के स्तर पर नियमित समीक्षा की जा रही है। भू-राजस्व की बकाया वसूली तथा राजस्व एवं सिविल न्यायालयों में लंबित महत्वपूर्ण प्रकरणों के शीघ्र निस्तारण पर भी विशेष ध्यान दिया जा रहा है। प्रमुख शासन सचिव परिवहन भवानी सिंह देथा ने बताया कि अगस्त तक परिवहन विभाग को 3 हजार 95 करोड़ रुपये का राजस्व प्राप्त हुआ, जबकि गत वर्ष की समान अवधि में यह 2 हजार 748 करोड़ रुपये था। वाणिज्यिक कर आयुक्त आनंदी वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग से जुड़ीं और बताया कि अगस्त तक वस्तु एवं सेवा कर से 19 हजार 622 करोड़ रुपये तथा मूल्य संवर्धित कर से 11 हजार 448 करोड़ रुपये की प्राप्तियां हुई हैं। गत वर्ष की समान अवधि की तुलना में इनमें क्रमशः 9.07 प्रतिशत और 14.09 प्रतिशत की वृद्धि दर्ज की गई है। इसी प्रकार पंजीयन एवं मुद्रांक विभाग द्वारा अगस्त तक 6 हजार 313 करोड़ रुपये का राजस्व प्राप्त हुआ, जो गत वर्ष की समान अवधि के 4 हजार 956 करोड़ रुपये की तुलना में 27.38 प्रतिशत अधिक है। बैठक में आबकारी, श्रम तथा नगरीय विकास एवं आवासन विभाग की राजस्व प्राप्तियों की भी समीक्षा की गई। इस अवसर पर संबंधित विभागों के वरिष्ठ अधिकारी उपस्थित रहे।

33वें अखिल भारतीय श्रावक संस्कार शिविर में देशभर से हजारों प्रतिनिधि पहुंचे

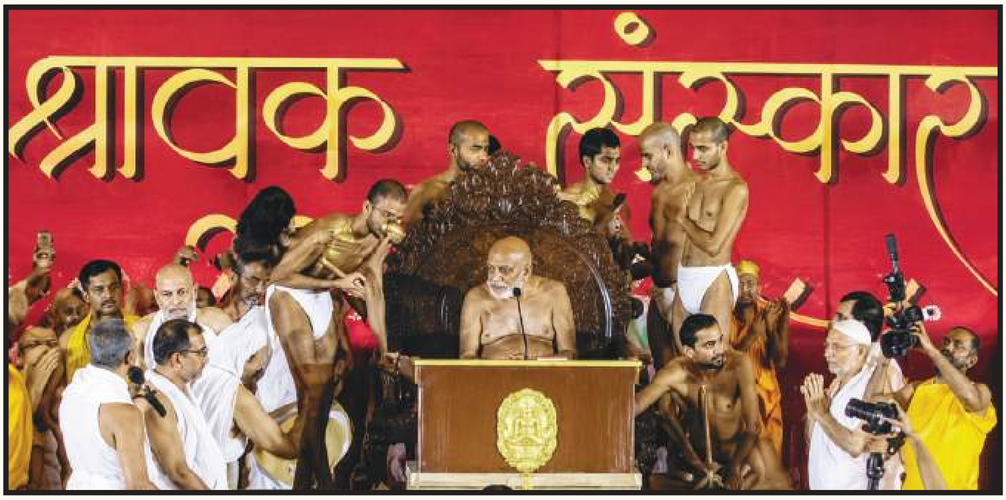

क्रोध शक्ति नहीं, कमजोरी की निशानी है। कमजोर को दबाया तो वह भव-भवांतरों में भी नहीं छोड़ेगा : मुनिपुंगव सुधासागर जी महाराज

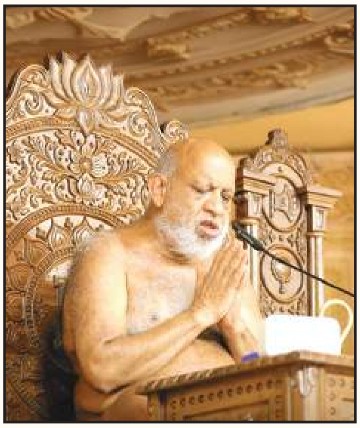

इंदौर. शाबाश इंडिया

श्रावक संस्कार शिविर के प्रथम दिवस धर्म और संस्कारों से ओतप्रोत अद्भुत दृश्य देखने को मिला। हजारों की संख्या में शिविरार्थी एवं धर्मप्रेमी समाजजन गुरुदेव की अमृतवाणी सुनने के लिए उपस्थित रहे। पूरा वातावरण भक्ति, अनुशासन और आध्यात्मिक ऊर्जा से सराबोर नजर आया। मुनिपुंगव श्री 108 सुधासागर जी महाराज ने उत्तम क्षमा धर्म की व्याख्या करते हुए कहा कि क्रोध शक्ति नहीं, बल्कि कमजोरी की निशानी है। व्यक्ति जब अपने से कमजोर, गरीब या अपने अधीन व्यक्ति पर क्रोध करता है, तब वह अपनी ताकत नहीं, बल्कि अपनी कमजोरी प्रदर्शित करता है। उन्होंने कहा कि अपने से कमजोर पर क्रोध नहीं करना चाहिए, अपने से अधिक शक्तिशाली पर भी क्रोध नहीं करना चाहिए और अपने पूजनीय माता-पिता, गुरु एवं भगवान के प्रति भी किसी परिस्थिति में क्रोध नहीं करना चाहिए।

सहारा नहीं दे सकते तो धक्का मत देना

उन्होंने अत्यंत मार्मिक संदेश देते हुए कहा, ''सहारा नहीं दे सकते तो धक्का मत देना। गिरे हुए को उठा नहीं सकते तो गिराना मत। आँसू नहीं पोंछ सकते तो रुलाना मत। भगवान के सामने झुकना भक्ति है, लेकिन किसी छोटे से छोटे जीव की रक्षा के लिए झुक जाना अहिंसा और करुणा है। मेरे लिए झुकोगे तो भक्त बनोगे, चींटी को बचाने के लिए झुकोगे तो भगवान बनोगे।'' गुरुदेव ने यह भी समझाया कि सच्ची भक्ति की परीक्षा तब होती है, जब परिस्थितियाँ हमारे अनुकूल न हों। भगवान और गुरु के प्रति श्रद्धा किसी स्वार्थ या अपेक्षा पर आधारित नहीं होनी चाहिए। काम पूरा हो तो भगवान को मानना और काम न हो तो भगवान से नाराज हो जाना भक्ति नहीं है।

राज्य छिन जाने के बाद भी श्रीराम को क्रोध नहीं आया

उन्होंने भगवान श्रीराम के चरित्र का उदाहरण देते हुए बताया कि राज्य और अयोध्या का सुख छिन जाने के बाद भी श्रीराम ने माता कैकेयी के प्रति क्रोध नहीं किया। पूजनीय के प्रति सम्मान परिस्थिति बदलने से नहीं बदलना चाहिए। उन्होंने कहा, ''जो हमारे पूजनीय हैं, उन्हें अपने अनुकूल बनाने का प्रयास मत करो; स्वयं उनके अनुकूल बनने का प्रयास करो। और जो हमसे कमजोर हैं, उन्हें अपने समान बनाने का प्रयास करो।'' उन्होंने कहा कि उत्तम क्षमा, करुणा, अहिंसा और सच्चे संस्कार का मार्ग है। कमजोर का शोषण करना, अपनी शक्ति का दुरुपयोग करना और अपने ही लोगों पर क्रोध करना अंततः व्यक्ति के पतन का कारण बनता है। इसलिए आज आवश्यकता है कि हम केवल ''मिच्छामि दुक्कड़म्'' कहकर क्षमा न माँगें, बल्कि क्षमा को अपने व्यवहार और जीवन का हिस्सा बनाएँ।

धर्मसभा का अद्भुत दृश्य, हजारों शिविरार्थी हुए उपस्थित

संस्कार शिविर के प्रथम दिवस हजारों की संख्या में समाजजनों की उपस्थिति ने पूरे वातावरण को आध्यात्मिक ऊर्जा से भर दिया। शिविरार्थियों में अनुशासन, मौन, संयम और गुरुभक्ति का अद्भुत भाव देखने को मिला। प्रचार प्रमुख संजय पाटोदी ने बताया कि धर्मसभा में प्रमुख रूप से चक्रवर्ती अध्यक्ष नवीन गोधा, सामाजिक संसद अध्यक्ष आनंद गोधा, चक्रवर्ती मनीष गोधा, महोत्सव अध्यक्ष अशोक डोशी, महामंत्री हर्ष जैन, आकाश कोयला, शिविर संयोजक दिनेश गंगवाल, प्रिंसिपल टोंग्या, संजय पाटोदी, हुकुमचंद जैन काका, प्रदीप ब्रह्मचारी, विनोद भैया, विजय धुर्रा, सोनाली बागड़िया, अर्चना गोधा, सौरभ बड़जात्या, विमल झांझरी, राहुल सेठी, भूपेंद्र भोपाली सहित बड़ी संख्या में धर्मप्रेमी समाजजन उपस्थित रहे।

दशलक्षण पर्व पर जिनेंद्र देव अभिषेक ग्रुप द्वारा प्रतिदिन अभिषेक एवं शांतिधारा

जयपुर. शाबाश इंडिया

दशलक्षण पर्व के पावन अवसर पर जिनेंद्र देव अभिषेक ग्रुप द्वारा प्रतिदिन प्रातः अभिषेक एवं पूजन किया जा रहा है। इसी कड़ी में आज श्री महावीर स्वामी मंदिर जी, गोपाल जी का रास्ता, जयपुर में अभिषेक कर विश्व शांति की मंगलकामना के साथ श्रीजी की शांतिधारा करने का पुण्य लाभ सुनील जैन लोहेवाला एवं राजेश सोगानी को प्राप्त हुआ। जिनेंद्र देव अभिषेक ग्रुप के संस्थापक दिनेश जैन बज ने बताया कि पिछले 15 वर्षों से दशलक्षण पर्व के इन दस दिनों में जयपुर के विभिन्न क्षेत्रों में स्थित जिनालयों में प्रतिदिन अभिषेक एवं पूजन की परंपरा निरंतर निभाई जा रही है। साथ ही, विश्व शांति एवं सर्वमंगल की भावना के साथ श्रीजी की शांतिधारा भी की जाती है। उन्होंने बताया कि यह आयोजन केवल धार्मिक अनुष्ठान तक सीमित नहीं है, बल्कि आत्मशुद्धि, संयम, अहिंसा एवं वीतराग प्रभु के गुणों के स्मरण का माध्यम भी है। दशलक्षण पर्व हमें अपने भीतर झांकने, आत्मचिंतन करने तथा जीवन में शांति एवं सद्भाव को बढ़ाने की प्रेरणा देता है। दशलक्षण पर्व हम सभी के जीवन में शांति, संयम, सद्भाव एवं निर्मल भाव लेकर आए–इसी मंगल भावना के साथ जिनेंद्र देव अभिषेक ग्रुप द्वारा प्रतिवर्ष इन धार्मिक आयोजनों का आयोजन किया जाता है।

दशलक्षण महापर्व की शुरूआत पर्यावरण संरक्षण के साथ

जैन इंजीनियर्स सोसायटी जयपुर चैप्टर नॉर्थ द्वारा इंजीनियर्स डे का भव्य आयोजन

जयपुर. शाबाश इंडिया। जैन इंजीनियर्स सोसायटी (जेईएस), जयपुर चैप्टर नॉर्थ द्वारा इंजीनियर्स डे के अवसर पर ''दशलक्षण महापर्व की शुरूआत पर्यावरण संरक्षण के साथ'' विषय पर विशेष कार्यक्रम का आयोजन श्री 1008 मुनि सुव्रतनाथ भगवान दिगंबर जैन मंदिर, महल योजना, जगतपुरा, जयपुर के प्रांगण में हर्षोल्लास एवं धार्मिक वातावरण में किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ कार्यकारिणी सदस्यों द्वारा भगवान श्री 1008 मुनि सुव्रतनाथ के अभिषेक एवं शांतिधारा के साथ किया गया। इस अवसर पर जीवदया कमेटी, श्री मुनि सुव्रतनाथ फाउंडेशन एवं मंदिर कार्यकारिणी के सदस्यों की गरिमामयी उपस्थिति रही। धार्मिक आयोजन के पश्चात मंदिर प्रांगण स्थित जेडीए पार्क में अशोक एवं बेलपत्र के पौधों का वृक्षारोपण किया गया। जेईएस जयपुर चैप्टर नॉर्थ द्वारा लगाए गए इन पौधों की देखभाल एवं रखरखाव की जिम्मेदारी मंदिर कार्यकारिणी, जीवदया कमेटी एवं श्री मुनि सुव्रतनाथ फाउंडेशन द्वारा सहर्ष स्वीकार की गई। यह पहल दशलक्षण महापर्व के दौरान जीवदया, पर्यावरण संरक्षण एवं प्रकृति के प्रति संवेदनशीलता के संदेश को सार्थक रूप प्रदान करती है। इस पुनीत अवसर पर जेईएस जयपुर चैप्टर के फाउंडर प्रेसिडेंट इंजी. अखिलेश कुमार जैन एवं अध्यक्ष इंजी. पवन पाटनी ने इंजीनियर्स डे के महत्व पर प्रकाश डालते हुए इंजीनियरिंग क्षेत्र की राष्ट्र निर्माण, तकनीकी विकास एवं समाज के प्रति जिम्मेदारियों पर विस्तार से विचार व्यक्त किए। सचिव इंजी. के. सी. जैन ने ''पर्यावरण संरक्षण हेतु वृक्षारोपण–आज की आवश्यकता'' विषय पर अपने विचार रखते हुए कहा कि पर्यावरण संरक्षण केवल वर्तमान पीढ़ी की जिम्मेदारी नहीं है, बल्कि आने वाली पीढ़ियों के सुरक्षित एवं स्वस्थ भविष्य के लिए भी आवश्यक है। उन्होंने अधिकाधिक वृक्षारोपण के साथ लगाए गए पौधों के संरक्षण को जनभागीदारी से जोड़ने की आवश्यकता पर बल दिया। कार्यक्रम में उपस्थित सभी सदस्यों ने पर्यावरण संरक्षण, जीवदया एवं सामाजिक उत्तरदायित्व के प्रति अपनी प्रतिबद्धता व्यक्त की। इस अवसर पर इंजीनियर्स डे और दशलक्षण महापर्व का सुंदर समन्वय करते हुए समाज को प्रकृति एवं जीवों के प्रति करुणा, संवेदनशीलता और संरक्षण का संदेश दिया गया।

सफलता के स्वर्णिम 58 YEAR 1967-2026

जयपुर - पदमपुरा - श्रीमहावीरजी पदयात्रा

परस्परोपग्रहो जीवानाम्

मंगलवार 29 सितम्बर, 2026 से रविवार 04 अक्टूबर 2026 तक

दो अतिशय क्षेत्रों की एक साथ पदयात्रा पदमपुरा एवं श्री महावीर जी का पुण्य लाभ

हरे भरे खेतों की सुरम्यता, नदियों - पर्वतों के प्राकृतिक सौन्दर्य के साथ

पदयात्रा में विभिन्न गाँवो के मंदिरों के दर्शनो का लाभ

सम्पर्क सूत्र

श्री बाबूलाल बाकलीवाल 9460380440
श्री मुक्तेन्द्र जैन 9414389118
श्री अरूण पाण्ड्या 9214420056
श्री मयंक भौंच 9828018882
श्री सौरभ गोधा 7976296309
श्री अखिलेश गंगवाल 9414044492

राजनीति

न्याय की भाषा अब जनभाषा बनेगी

कांतिलाल मांडोत

हिंदी दिवस के अवसर पर सुप्रीम कोर्ट ने हिंदी में 'जन सूचना सेवा' शुरू करने की घोषणा की है। इस सेवा के तहत चयनित महत्वपूर्ण फैसलों और आदेशों का सरल हिंदी में सार उपलब्ध कराया जाएगा। साथ ही प्रतिदिन लगभग 15 से 30 मिनट के हिंदी ऑडियो और वीडियो बुलेटिन भी जारी किए जाएंगे। इसका उद्देश्य आम नागरिकों, वादकारियों और विशेष रूप से दिव्यांगजनों के लिए महत्वपूर्ण न्यायिक निर्णयों, उनके प्रभाव और आगे की प्रक्रिया को समझना आसान बनाना है। न्यायपालिका के फैसले अक्सर कानूनी शब्दावली और जटिल भाषा में लिखे जाते हैं। ऐसे में सामान्य व्यक्ति के लिए यह समझना कठिन हो सकता है कि अदालत ने वास्तव में क्या निर्णय दिया है, उसका उसके जीवन पर क्या प्रभाव पड़ेगा और आगे उसे क्या करना है। किसी फैसले का संबंध व्यक्ति के अधिकार, संपत्ति, रोजगार, शिक्षा, परिवार या किसी अन्य महत्वपूर्ण विषय से हो सकता है। इसलिए निर्णय आने के बाद उसका अर्थ समझना भी न्याय तक पहुंच का महत्वपूर्ण हिस्सा है। 'जन सूचना सेवा' न्यायालय की भाषा और आम नागरिक की समझ के बीच की दूरी कम करने का प्रयास है। सरल हिंदी में फैसलों का सार मिलने से नागरिकों को यह जानने में मदद मिलेगी कि अदालत ने क्या कहा और निर्णय का सामान्य अर्थ क्या है। हालांकि यह सेवा कानूनी सलाह या मूल न्यायिक आदेश का विकल्प नहीं होगी, लेकिन फैसले की बुनियादी जानकारी समझने में यह उपयोगी माध्यम बन सकती है। इस पहल का एक महत्वपूर्ण पक्ष इसका ऑडियो और वीडियो प्रारूप है। केवल लिखित जानकारी उपलब्ध कराने के बजाय निर्णयों को सुनने और देखने के माध्यम से भी समझाया जाएगा। इससे उन लोगों को विशेष सुविधा मिल सकती है, जिन्हें लंबे कानूनी दस्तावेज पढ़ने में कठिनाई होती है। डिजिटल माध्यमों के बढ़ते उपयोग के दौर में न्यायिक जानकारी को ऐसे प्रारूप में उपलब्ध कराना उसकी पहुंच को व्यापक बनाने में सहायक हो सकता है। भारत जैसे विशाल और भाषाई विविधता वाले देश में न्याय की जानकारी केवल कानून के विशेषज्ञों तक सीमित नहीं रहनी चाहिए। नागरिकों को अपने अधिकारों और न्यायालय के महत्वपूर्ण निर्णयों की जानकारी ऐसी भाषा में मिलना जरूरी है, जिसे वे सहजता से समझ सकें।

संपादकीय

नेतृत्व, संकल्प और विकसित भारत की दिशा...

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का जन्मदिवस केवल एक राजनीतिक व्यक्तित्व के जन्मदिवस का अवसर नहीं, बल्कि भारत की लोकतांत्रिक यात्रा, विकास की आकांक्षाओं और बदलते वैश्विक परिदृश्य में देश की भूमिका पर विचार करने का अवसर भी है। 17 सितंबर को जन्मदिवस के अवसर पर देशभर में उनके सार्वजनिक जीवन, राजनीतिक यात्रा और प्रधानमंत्री के रूप में किए गए कार्यों की चर्चा होती है। नरेंद्र मोदी का जन्म 17 सितंबर

1950 को गुजरात के वडनगर में हुआ था। नरेंद्र मोदी का राजनीतिक जीवन संगठन, जनसंपर्क और प्रशासनिक अनुभव से जुड़ा रहा है। गुजरात के मुख्यमंत्री के रूप में लंबे कार्यकाल के बाद वे 2014 में देश के प्रधानमंत्री बने। 2019 में दूसरी बार और 2024 में तीसरी बार उन्होंने प्रधानमंत्री पद की शपथ ली। 9 जून 2024 को उन्होंने लगातार तीसरी बार प्रधानमंत्री पद की शपथ ली। उनकी सरकार के कार्यकाल में डिजिटल इंडिया, प्रधानमंत्री जनधन योजना, प्रत्यक्ष लाभ अंतरण, उज्ज्वला योजना, स्वच्छ भारत अभियान, आयुष्मान भारत, बुनियादी ढांचे के विस्तार और डिजिटल सेवाओं जैसे विषय राष्ट्रीय नीतियों के केंद्र में रहे हैं। इन पहलों का उद्देश्य सरकारी सेवाओं और कल्याणकारी योजनाओं की पहुंच को व्यापक बनाना तथा सेवा वितरण में तकनीक का उपयोग बढ़ाना रहा है। वहीं, इन नीतियों के प्रभाव और क्रियान्वयन को लेकर विपक्ष तथा विभिन्न सामाजिक वर्गों की ओर से उठाए गए सवाल भी लोकतांत्रिक विमर्श का हिस्सा हैं। विदेश नीति के क्षेत्र में भी मोदी सरकार ने भारत की वैश्विक भूमिका को प्रमुखता दी है। अमेरिका, रूस, यूरोप, पश्चिम एशिया और एशिया-प्रशांत क्षेत्र के देशों के साथ संबंधों को आर्थिक, सामरिक और कूटनीतिक दृष्टि से आगे बढ़ाने पर जोर रहा है। 2023 में भारत की जी-20 अध्यक्षता और नई दिल्ली में आयोजित शिखर सम्मेलन ने वैश्विक मंच पर भारत की प्राथमिकताओं को सामने रखने का अवसर दिया। आर्थिक क्षेत्र में आत्मनिर्भर भारत, मेक इन इंडिया, स्टार्टअप, विनिर्माण और डिजिटल अर्थव्यवस्था को बढ़ावा देने की नीतियां सरकार के प्रमुख एजेंडे में रही हैं। इसके साथ रोजगार, महंगाई, कृषि, ग्रामीण आय और आर्थिक असमानता जैसे प्रश्न भी लगातार सार्वजनिक बहस का विषय बने हुए हैं। किसी भी विकास मॉडल का महत्व इस बात से जुड़ा होता है कि उसका लाभ समाज के विभिन्न वर्गों तक किस सीमा तक पहुंचता है। मोदी के नेतृत्व की एक प्रमुख विशेषता उनका व्यापक जनसंवाद और डिजिटल माध्यमों का उपयोग है। रेडियो कार्यक्रमों, सोशल मीडिया और सार्वजनिक कार्यक्रमों के माध्यम से वे लगातार जनता से संवाद करते रहे हैं। समर्थक इसे प्रभावी जनसंपर्क और निर्णय क्षमता के रूप में देखते हैं, जबकि आलोचक सत्ता के केंद्रीकरण और संस्थागत विमर्श से जुड़े प्रश्न उठाते हैं। ये दोनों दृष्टिकोण लोकतांत्रिक बहस का हिस्सा हैं। प्रधानमंत्री के जन्मदिवस पर विकसित भारत का लक्ष्य भी चर्चा के केंद्र में होना स्वाभाविक है।

-राकेश जैन गोदिका

परिदृश्य

ओजोन परत का संरक्षण

सुरेश सिंह बैस 'शाश्वत'

पृथ्वी पर जीवन की निरंतरता अनेक प्राकृतिक संतुलनों पर निर्भर करती है। इनमें ओजोन परत का विशेष महत्व है। यह सूर्य से आने वाली हानिकारक पराबैंगनी (यूवी) किरणों को अवशोषित कर पृथ्वी पर जीवन की रक्षा करती है। यदि यह प्राकृतिक सुरक्षा कवच कमजोर हो जाए, तो मानव स्वास्थ्य के साथ-साथ वनस्पतियों, जीव-जंतुओं और संपूर्ण पारिस्थितिकी तंत्र पर गंभीर प्रभाव पड़ सकता है। इसी महत्व को रेखांकित करने के लिए प्रतिवर्ष 16 सितंबर को विश्व ओजोन दिवस मनाया जाता है। विश्व ओजोन दिवस वर्ष 1987 में अपनाए गए मॉन्ट्रियल प्रोटोकॉल की स्मृति में मनाया जाता है। यह अंतर्राष्ट्रीय समझौता उन रसायनों के उत्पादन और उपयोग को नियंत्रित करने के लिए किया गया था, जो ओजोन परत को नुकसान पहुंचाते हैं। वैश्विक स्तर पर इसके प्रभावी क्रियान्वयन को पर्यावरण संरक्षण के क्षेत्र में अंतर्राष्ट्रीय सहयोग की महत्वपूर्ण उपलब्धि माना जाता है। ओजोन परत पृथ्वी के वायुमंडल के समताप मंडल में मौजूद ओजोन की अपेक्षाकृत अधिक सांद्रता वाला क्षेत्र है। इसका प्रमुख कार्य सूर्य की हानिकारक पराबैंगनी किरणों को अवशोषित करना है। अत्यधिक यूवी विकिरण मानव स्वास्थ्य के लिए गंभीर खतरा बन सकता है। इससे त्वचा कैंसर और मोतियाबिंद का जोखिम बढ़ सकता है तथा प्रतिरक्षा प्रणाली पर भी प्रतिकूल प्रभाव पड़ सकता है। इसके अलावा, अत्यधिक पराबैंगनी विकिरण फसलों, वनस्पतियों और समुद्री पारिस्थितिकी तंत्र को भी प्रभावित कर सकता है। बीसवीं शताब्दी के उत्तरार्ध में वैज्ञानिकों ने पाया कि रेफ्रिजरेटर, एयर कंडीशनर, एरोसोल और विभिन्न औद्योगिक प्रक्रियाओं में प्रयुक्त क्लोरोफ्लोरोकार्बन (सीएफसी) सहित कुछ रसायन ओजोन परत के क्षरण के लिए जिम्मेदार हैं। इसके बाद अंतर्राष्ट्रीय समुदाय ने सामूहिक प्रयास शुरू किए। मॉन्ट्रियल प्रोटोकॉल ने इन ओजोन-क्षयकारी पदार्थों के उत्पादन और खपत को चरणबद्ध तरीके से कम करने के लिए वैश्विक सहयोग का मार्ग प्रशस्त किया। भारत ने भी ओजोन संरक्षण के लिए विभिन्न नीतिगत और तकनीकी कदम उठाए हैं। ओजोन-क्षयकारी पदार्थों के उपयोग को नियंत्रित करने के साथ पर्यावरण अनुकूल तकनीकों को बढ़ावा दिया जा रहा है। उद्योगों, वैज्ञानिक संस्थानों और नीति निमार्ताओं की भूमिका इस प्रयास में महत्वपूर्ण है। ओजोन संरक्षण केवल अंतर्राष्ट्रीय दायित्व नहीं, बल्कि आने वाली पीढ़ियों के प्रति हमारी जिम्मेदारी भी है। ओजोन संरक्षण का संबंध जलवायु परिवर्तन से भी जुड़ा हुआ है। हालांकि ओजोन क्षरण और वैश्विक तापवृद्धि अलग-अलग पर्यावरणीय समस्याएं हैं, लेकिन कई स्वच्छ और ऊर्जा-कुशल तकनीकें दोनों चुनौतियों से निपटने में सहायक हो सकती हैं। ऊर्जा की बचत, पर्यावरण अनुकूल उपकरणों का उपयोग, स्वच्छ तकनीक अपनाना और प्रदूषण को कम करना इस दिशा में उपयोगी कदम हैं। प्रत्येक नागरिक भी ओजोन संरक्षण में योगदान दे सकता है। पर्यावरण अनुकूल उत्पादों का इस्तेमाल, ऊर्जा का विवेकपूर्ण उपयोग, अनावश्यक प्रदूषण से बचाव और पर्यावरण के प्रति जिम्मेदार जीवनशैली जैसे छोटे प्रयास सामूहिक रूप से बड़ा प्रभाव डाल सकते हैं। स्कूलों और कॉलेजों में पर्यावरण शिक्षा को केवल पाठ्यक्रम तक सीमित रखने के बजाय व्यवहारिक गतिविधियों से जोड़ना भी आवश्यक है। आज जब दुनिया सतत विकास की ओर बढ़ रही है, तब आर्थिक प्रगति और पर्यावरण संरक्षण के बीच संतुलन बनाना बेहद जरूरी है।

चिकनगुनिया : तेज बुखार और जोड़ों के दर्द वाली वायरल बीमारी

चिकनगुनिया एक वायरल बीमारी है, जो संक्रमित एडीज एजिप्टी और एडीज एल्बोपिक्टस मच्छरों के काटने से फैलती है। ये मच्छर सामान्यतः दिन के समय अधिक सक्रिय रहते हैं। चिकनगुनिया की प्रमुख पहचान अचानक तेज बुखार और जोड़ों में तेज दर्द होना है।

मुख्य लक्षण

मच्छर के काटने के लगभग 2 से 12 दिन, सामान्यतः 4 से 8 दिन बाद लक्षण शुरू हो सकते हैं। इनमें प्रमुख रूप से–

अचानक तेज बुखार होना।

हाथ-पैर तथा अन्य जोड़ों में तेज दर्द होना।

जोड़ों में सूजन और अकड़न होना।

मांसपेशियों में दर्द होना।

सिरदर्द होना।

अत्यधिक थकान और कमजोरी महसूस होना।

त्वचा पर लाल चकत्ते पड़ना।

मतली या उल्टी होना।

कभी-कभी आंखों में लालिमा होना।

जोड़ों का दर्द सामान्यतः कुछ दिनों या सप्ताह में कम हो जाता है, लेकिन कुछ लोगों में यह कई सप्ताह या महीनों तक बना रह सकता है। कुछ मामलों में लंबे समय तक भी जोड़ों की समस्या बनी रह सकती है। भारत में चिकनगुनिया के कई प्रकोप सामने आए हैं और अलग-अलग वर्षों में इसके मामलों में वृद्धि देखी गई है।

कारण और संक्रमण कैसे फैलता है?

चिकनगुनिया का कारण चिकनगुनिया वायरस है। जब कोई संक्रमित मच्छर किसी संक्रमित व्यक्ति को काटता है, तो वह वायरस ग्रहण कर सकता है। इसके बाद वही संक्रमित मच्छर किसी दूसरे व्यक्ति को काटने पर वायरस को उसके शरीर में पहुंचा सकता है। बीमारी के शुरूआती दिनों में संक्रमित व्यक्ति के रक्त में वायरस की मात्रा अधिक हो सकती है, जिसके कारण मच्छर के संक्रमित होने का खतरा रहता है।

चिकनगुनिया सामान्यतः सीधे व्यक्ति से व्यक्ति में नहीं फैलता। इसका प्रमुख प्रसार संक्रमित एडीज मच्छरों के माध्यम से होता है।

चिकनगुनिया की अवस्थाएं

व्यवहार में चिकनगुनिया को लक्षणों की अवधि के आधार पर तीन अवस्थाओं में समझा जा सकता है...

तीव्र अवस्था: बीमारी के शुरूआती दिनों में तेज बुखार और जोड़ों में तेज दर्द प्रमुख रूप से दिखाई देता है।

उप-तीव्र अवस्था: बुखार कम होने के बाद भी जोड़ों में दर्द, सूजन या अकड़न बनी रह सकती है।

दीर्घकालिक अवस्था: कुछ रोगियों में जोड़ों का दर्द कई महीनों तक बना रह सकता है और कभी-कभी लंबे समय तक जोड़ों से संबंधित परेशानी जारी रह सकती है।

कौन-कौन सी जांच कराई जाती हैं?

चिकनगुनिया के लक्षण डेंगू और जीका जैसी बीमारियों से मिलते-जुलते हो सकते हैं। इसलिए केवल लक्षणों के आधार पर निश्चित निदान करना कठिन हो सकता है। चिकित्सक की सलाह के अनुसार आवश्यक जांच कराई जाती है।

मुख्य जांच:

आरटी-पीसीआर: बीमारी के शुरूआती चरण में वायरस की पहचान करने में उपयोगी हो सकता है।

चिकनगुनिया एंटीबॉडी टेस्ट: बीमारी के बाद के चरण में शरीर में बनी एंटीबॉडी की जांच के लिए किया जाता है।

सीबीसी एवं प्लेटलेट काउंट: रोगी की सामान्य स्थिति का आकलन करने तथा डेंगू जैसी बीमारियों के मूल्यांकन में सहायक हो सकते हैं।

अन्य जांच: आवश्यकता के अनुसार एलएफटी, केएफटी तथा अन्य जांच चिकित्सक की सलाह पर कराई जा सकती हैं।

डेंगू को अलग करना विशेष रूप से महत्वपूर्ण है, क्योंकि डेंगू और चिकनगुनिया दोनों एक ही प्रकार के एडीज मच्छरों से फैल सकते हैं और इनके कुछ लक्षण एक जैसे हो सकते हैं।

सावधानी और बचाव

घर के आसपास पानी जमा न होने दें।

कूलर, गमले, टायर, बाल्टी और अन्य पात्रों में जमा पानी नियमित रूप से खाली करें।

पानी की टंकियों और बर्तनों को ढककर रखें।

दिन के समय भी मच्छरों से बचाव करें।

पूरी बांह के कपड़े पहनें।

मच्छरदानी और खिड़कियों पर जाली का प्रयोग करें।

मच्छर भगाने वाली टिकिया, क्रीम या अन्य उत्पादों का लेबल पर दिए निर्देशों के अनुसार उपयोग करें।

चिकनगुनिया से पीड़ित व्यक्ति को बीमारी के शुरूआती दिनों में मच्छरों के काटने से विशेष रूप से बचाना चाहिए, ताकि संक्रमित मच्छरों के माध्यम से संक्रमण अन्य लोगों तक न पहुंचे।

चिकनगुनिया का सामान्य चिकित्सा उपचार

चिकनगुनिया के लिए वर्तमान में कोई ऐसी विशिष्ट एंटीवायरल दवा उपलब्ध नहीं है जो सामान्य रूप से वायरस को समाप्त करने के लिए इस्तेमाल की जाती हो। उपचार मुख्यतः बुखार और दर्द को नियंत्रित करने, पर्याप्त मात्रा में तरल पदार्थ लेने तथा पर्याप्त आराम पर आधारित होता है। बुखार और दर्द के लिए दवा का चुनाव चिकित्सक की सलाह से किया जाना चाहिए। डेंगू की संभावना होने पर कुछ दर्द निवारक दवाएं, विशेषकर एस्पिरिन और कुछ एनएसएआईडी, रक्तस्राव का जोखिम बढ़ा सकती हैं। इसलिए डेंगू की संभावना स्पष्ट होने तक स्वयं से दर्द निवारक दवा लेना उचित नहीं है।

होम्योपैथिक उपचार के बारे में

होम्योपैथी में चिकनगुनिया के बुखार या जोड़ों के दर्द के लिए विभिन्न दवाओं का प्रयोग किया जाता है, लेकिन चिकनगुनिया को ठीक करने या चिकनगुनिया वायरस को समाप्त करने में होम्योपैथिक दवाओं की प्रभावशीलता का विश्वसनीय वैज्ञानिक प्रमाण उपलब्ध नहीं है। इसलिए चिकनगुनिया के मामले में आवश्यक चिकित्सकीय जांच, पर्याप्त पानी एवं तरल पदार्थ का सेवन, बुखार एवं दर्द का उचित उपचार तथा डेंगू जैसी अन्य संभावित बीमारियों का चिकित्सकीय मूल्यांकन प्राथमिकता होना चाहिए। यदि कोई व्यक्ति होम्योपैथिक दवा लेना चाहता है, तो उसे अपने चिकित्सक को इसकी जानकारी देनी चाहिए और इसे आवश्यक चिकित्सा के विकल्प के रूप में नहीं लेना चाहिए।

तुरंत चिकित्सकीय जांच जरूरी

यदि बहुत अधिक कमजोरी, लगातार उल्टी, सांस लेने में परेशानी, बेहोशी या भ्रम, बहुत कम पेशाब, रक्तस्राव, अत्यधिक पेट दर्द अथवा तेजी से बिगड़ती स्थिति दिखाई दे तो तत्काल चिकित्सकीय जांच करानी चाहिए। बुजुर्गों, छोटे बच्चों तथा पहले से हृदय रोग, मधुमेह, उच्च रक्तचाप या अन्य गंभीर स्वास्थ्य समस्याओं से जूझ रहे लोगों में विशेष सावधानी आवश्यक है।

– डॉ. एम. एल. जैन ''मणि''
एम.ए., बी.एम.एस. (होम्योपैथिक), पीएच.डी.
अंतरराष्ट्रीय ख्यातिप्राप्त वरिष्ठ होम्योपैथ एवं पूर्व शैक्षणिक सदस्य, होम्योपैथिक विश्वविद्यालय, जयपुर
मोबाइल : 8949032693

दसलक्षण महापर्व पर विशेष

उत्तम मार्दव

''मैं'' से 'हम' तक की यात्रा

मार्दव धर्म आत्मा अर्थात निजात्मा, स्व-स्वरूप का धर्म है। जहाँ मृदुभाव अथवा नम्रता नहीं है, वहाँ धर्म भी नहीं है। यदि हमारे चित्त में मृदुता है, व्यवहार में नम्रता है और हम सभी के प्रति विनम्रता का भाव रखते हैं, तभी हम सम्यक रूप से धर्म के विशेष गुण मार्दव धर्म का पालन कर सकते हैं। मन, वचन और काय के माध्यम से ही जीवन में विचार एवं कार्य-प्रक्रिया होती है। यदि हम अपने मन, वचन और कर्म में किसी भी प्रकार की वक्रता अथवा दोष को स्थान नहीं देंगे, तो मार्दव धर्म अर्थात मृदुता का गुण हमारे जीवन में सदैव स्थित रहेगा। आत्म-जागरण की यात्रा जितनी जल्दी शुरू हो, उतना ही अच्छा है। इसके लिए उत्तम क्षमा, मार्दव, आर्जव, सत्य, शौच, संयम, तप, त्याग, आकिंचन्य और ब्रह्मचर्य—ये धर्म के दस लक्षण हमारी आत्मा में स्वाभाविक रूप से स्थित रहें, यही प्रत्येक व्यक्ति का उद्देश्य होना चाहिए। आचार्य समन्तभद्र रचित 'रत्नकरण्ड श्रावकाचार' में 'मान' के आठ प्रकार बताए गए हैं—

''ज्ञानं पूजां कुलं जातिं बलं ऋद्धिं तपो वपुः।
अष्टावाश्रित्य मानित्वं स्मयमाहुर्गतस्मयः॥''

सभी गुरुजन और आगम-शास्त्र यही बताते हैं कि मनुष्य को कभी भी किसी भी प्रकार का अहंकार नहीं करना चाहिए। संसार में कोई भी वस्तु स्थायी नहीं है। उत्तम मार्दव धर्म का पालन करने से जीवन श्रेष्ठ बनता है। मृदुता और विनम्रता मनुष्य के स्वाभाविक गुण हैं, किंतु मनुष्य ज्ञान, पूजा, कुल, जाति, बल, तप, ऋद्धि, शरीर आदि का अभिमान करने में ही अपनी शान समझता है। वह यह भूल जाता है कि इस दुनिया में हम न कुछ साथ लेकर आए हैं और न ही कुछ साथ लेकर जाएंगे। यदि कुछ साथ जाएगा, तो वे हमारे कर्म होंगे। बाकी सब यहीं पीछे छूट जाएगा। हमारे गुण, कर्म और ज्ञान ही हमारी आत्मिक यात्रा में सार्थक भूमिका निभाते हैं। उत्तम मार्दव हमें 'मैं' और 'मेरा' के भाव से ऊपर उठाकर समता, मैत्री और आत्मिक शुद्धि की ओर ले जाता है। जब अहंकार समाप्त होता है, तब मन में प्रेम, करुणा और आत्मिक आनंद का प्रकाश फैलता है। विनम्रता हमें यह सिखाती है कि जीवन में जो कुछ मिला है, उसमें अनेक लोगों और परिस्थितियों का योगदान है। सच्चा ज्ञानी वही है, जो ज्ञान बढ़ने के साथ और अधिक सरल एवं विनम्र बने। जीवन से हम कब, कहाँ और कैसे विदा होंगे, यह कोई नहीं जानता। किंतु जीवन और मृत्यु के बीच का पूरा अवसर हमारे हाथ में है। यदि हम सहज रहते हुए इसका सदुपयोग आत्मचिंतन, सेवाभाव और सद्कार्यों में करते हैं, तो हम अपने जीवन का एक आदर्श स्थापित कर सकते हैं। किंतु यदि हम इस समय को छल, कपट, माया, क्रोध और लोभ के वशीभूत होकर बुरे कार्यों में लगाते हैं अथवा अपनी हर वस्तु पर अभिमान करते हुए बिताते हैं, तो हम अपना यह जीवन भी व्यर्थ करते हैं और अपने अगले भव को भी बिगाड़ लेते हैं।

गंगासागर में पंचकल्याणक महोत्सव हेतु आचार्य श्री वसुनंदी जी मुनिराज ससंघ को श्रीफल अर्पित

हावड़ा, कोलकाता. शाबाश इंडिया। परम पूज्य 108 आचार्य श्री वसुनंदी जी मुनिराज ससंघ के मंगल सान्निध्य में आगामी 4 से 6 दिसंबर तक गंगासागर में भव्य पंचकल्याणक महोत्सव का आयोजन किया जाएगा। इस आयोजन के लिए पौंड्रा जैन समाज के 35 बुद्धिजीवी प्रतिनिधियों ने हावड़ा क्लब हाउस पहुंचकर आचार्य श्री के दर्शन किए तथा श्रीफल (नारियल) भेंट कर आशीर्वाद प्राप्त किया। मंगलाचरण के पश्चात डॉ. निर्मल कुमार मंडल, अध्यक्ष, पौंड्रा जैन समाज एवं अन्य प्रतिनिधियों ने मुनिराज श्री के चरणों में अर्घ्य समर्पित किया। प्रतिनिधियों ने आचार्य श्री से ससंघ गंगासागर विहार करने का भावपूर्ण निवेदन भी किया।

मंदिर निर्माण एवं भूमि हस्तांतरण

तीर्थ संरक्षिणी महासभा के राष्ट्रीय महामंत्री राजकुमार जैन सेठी ने बताया कि गंगासागर में मात्र सात दिनों में वेदी प्रतिष्ठा, चैत्यालय निर्माण एवं मूर्ति स्थापना का कार्य संपन्न किया गया था। इसी क्रम में विद्याधरनगर मंदिर बाजार में जिनालय तथा ''आचार्य भद्रबाहु दिगंबर जैन अहिंसा निःशुल्क प्राथमिक विद्यालय'' के निर्माण के लिए पौंड्रा जैन समाज के प्रतिनिधियों ने महासभा को भूमि संबंधी दस्तावेज सौंपे।

गुरु आशीर्वाद

समारोह में आचार्य श्री वसुनंदी जी महाराज ने आशीर्वचन देते हुए कहा, ''जो भी कार्य करें, पूर्ण संकल्प और दृढ़ता के साथ करें।'' समारोह के अंत में विजय कुमार सरावगी ने धन्यवाद ज्ञापित किया।

पर्वों के पर्वराज दसलक्षण महापर्व का प्रथम चरण: उत्तम क्षमा

आचार्य प्रसन्न सागरजी बोले—क्रोध को दबाने की नहीं, उसे देखने और जानने की आवश्यकता है...

सोनकच्छ. शाबाश इंडिया

पर्वों के पर्वराज दसलक्षण महापर्व का शुभारंभ बुधवार को पुष्पगिरी तीर्थ, सोनकच्छ में धार्मिक एवं आध्यात्मिक वातावरण के बीच हुआ। परम पूज्य पुष्पगिरी तीर्थ प्रणेता गणाचार्य श्री पुष्पदंत सागरजी महाराज के सान्निध्य में व्रत चक्रवर्ती पट्ट विभूषण अंतर्मना आचार्य श्री 108 प्रसन्न सागरजी महाराज एवं उपाध्याय श्री पियूष सागरजी महाराज ससंघ वर्षायोग के लिए पुष्पगिरी तीर्थ पर विराजमान हैं। उनके सान्निध्य में दसलक्षण महापर्व के प्रथम दिवस विभिन्न धार्मिक एवं आध्यात्मिक कार्यक्रम आयोजित किए गए। धर्मसभा को संबोधित करते हुए अंतर्मना आचार्य श्री प्रसन्न सागरजी महाराज ने प्रथम दिवस उत्तम क्षमा धर्म की व्याख्या करते हुए कहा कि जिंदगी जीने के लिए कभी-कभी अपमान, उपेक्षा और कषाय के झंझटों से भी जूझना पड़ता है। इसलिए क्रोध करने के लिए भले ही कोई समय अनुकूल लगे, लेकिन क्षमा के लिए वर्ष के बारहों महीने, चौबीसों घंटे अवसर उपलब्ध है। उन्होंने कहा कि रोजमर्रा के जीवन में अक्सर ऐसा होता है कि व्यक्ति क्रोध करने के बाद पछताता है कि मुझे क्रोध नहीं करना था, फिर क्यों कर दिया? जरा-सा निमित्त मिलते ही मनुष्य बेकाबू हो जाता है और बाद में पश्चाताप करता है। यह क्रम जीवनभर चलता रहता है। उन्होंने कहा कि अब केवल पश्चाताप नहीं, बल्कि प्रायश्चित और आत्मचिंतन की आवश्यकता है। व्यक्ति को अपने क्रोध के परिणामों पर गंभीरता से विचार करना चाहिए।

क्रोध को दबाना नहीं, समझना जरूरी

आचार्य श्री ने कहा कि क्रोध आ जाना मात्र समस्या नहीं है, बल्कि क्रोध को मन में रख लेना और बैर की गांठ बांध लेना अधिक घातक है। क्रोध में बदले का भाव ही मनुष्य को भव-भव भटकने के लिए मजबूर करता है। जैन दर्शन में कमठ के प्रसंग का उल्लेख करते हुए उन्होंने कहा कि बदले के भाव के कारण जीव को लंबे समय तक संसार में भटकना पड़ता है और अनेक दुखों का सामना करना पड़ता है। उन्होंने कहा कि क्रोध को दबाने की नहीं, बल्कि उसे देखने और जानने की आवश्यकता है। क्रोध का दमन भी खतरनाक हो सकता है। व्यक्ति कब तक अपने भीतर क्रोध को दबाकर रखेगा? एक दिन उसका गुबार बाहर आ सकता है। इसलिए अपने भीतर उठने वाले क्रोध के कारण और उसके परिणामों को समझना आवश्यक है।

दसलक्षण महापर्व पर विशेष

उत्तम क्षमा से निर्मल होता है मन

डॉ. इन्दु जैन राष्ट्र गौरव,दिल्ली
(राष्ट्रीय-अंतर्राष्ट्रीय जैन प्रतिनिधि)

जैन-धर्म की वर्तमान चौबीसी के प्रथम तीर्थंकर ऋषभदेव से चौबीसवें तीर्थंकर का संदेश किसी एक वर्ग या समुदाय तक सीमित नहीं है। अहिंसा, सत्य, संयम, क्षमा, अपरिग्रह और करुणा ऐसे सार्वभौमिक मूल्य हैं, जिनकी आज पूरे समाज और विश्व को आवश्यकता है।प्रत्येक मनुष्य में क्षमा रूपी गुण जन्म से ही विद्यमान रहता है बस इस गुण को अपनी जीवनशैली में यदि धारण करने का अभ्यास किया जाए तो हम अपने जीवन से हमेशा के लिए मन के क्रोध और कलुषता को दूर कर सकते हैं। उत्तम क्षमा एक औषधि है जो मन की गहराई में जाकर घावों का इलाज करती है।एक बेहतरीन ज़िन्दगी जीने के लिए उत्तम क्षमा एक ऐसा भावनात्मक पढ़ाव है जो मन को मजबूती प्रदान करता है, मन स्वस्थ हो तो ज़िन्दगी खूबसूरत होती है। धम्मो वत्थु सहावो अर्थात् वस्तु का स्वभाव ही धर्म है।धर्म का यह विश्लेषण करते हुए प. पू. आचार्य कार्तिकेय स्वामी जी कार्तिकेयानुप्रेक्षा ग्रंथ में लिखा।पर इससे मन में सहज ही प्रश्न उठता है कि हम अपना स्वभाव कैसे प्राप्त कर सकते हैं ? तब वे बताते हैं कि...

धम्मो वत्थु सहावो, खमादि भावो यदसविहो धम्मो।
रयणत्तयं च धम्मो, जीवाणं रक्खणं धम्मो ।।

अर्थात् जीवों की रक्षा से रत्नत्रय धर्म तक पहुँचा जाता है और रत्नत्रय धर्म, दस प्रकार के धर्मो तक ले जाता है तथा साधक अपने स्वभाव में स्थिर हो जाता है। यद्यपि धर्म एक ही है दस आदि नहीं, पर आत्म स्वभाव तक पहुँचाने के लिए पर्यूषण महापर्व दस सीढ़ियों के समान हैं इसके बिना लक्ष्य तक नहीं पहुँचा जा सकता। पर्युषण,दशलक्षण महापर्व शाश्वत पर्व हैं प्रतिदिन धर्म के इन दस लक्षणों की पूजा होती है और दसलक्षण महापर्व के प्रथम दिवस 'उत्तम क्षमा धर्म' की विशेष आराधना होती है । क्रोध व्यक्ति का स्वभाव नहीं है फिर भी जब भी कोई व्यक्ति क्षण भर के लिए भी क्रोध करता है तो उस क्रोध का प्रभाव लंबे समय तक रहता है।उत्तम क्षमा हमें क्रोध के स्थान पर शांति और प्रतिशोध के स्थान पर सद्भाव चुनना सिखाती है। पर्युषण महापर्व के प्रारंभ और समाप्ति दोनों पर क्षमा उपस्थित है।एक उत्तम क्षमा के रूप में दूसरी

क्षमावाणी क्षमा याचना के रूप में।उत्तम क्षमा तीन लोक में सारे उत्तम क्षमा रत्ना को प्राप्त कराने वाली और दुर्गति के दुखों को हरण करने वाले एवं जन्म-मरण रूपी समुद्र पार करने वाली है। जहां आक्रोश, गाली आदि कठोर वचन के सुनने पर भी अपने आत्मा में उसे उस कहने वाले के प्रति समभाव रहे वही उत्तम क्षमा है।यह संसार के समस्त जीवों के प्रति मैत्री की भावना से परिपूरित है।पर्युषण महापर्व हमारे जीवन में आत्म जागरण का मार्ग दिखाते हैं।पर्युषण पर्व कह रहा है कि अपनी जिन्दगी में अपने पापों को रग-रग से विसर्जित कर दो। उसी दिन तुम्हारे भीतर का सारा प्रदूषण समाप्त हो जायेगा और पर्युषण की शाश्वत सुगन्ध से आत्मा सुवासित हो जायेगी। मनुष्य के वास्तविक गुणों को उजागर करने और स्वयं को जगाने के लिए आते हैं पर्युषण महापर्व।पूरे विश्व के जैन धर्मावलम्बी पर्युषण महापर्व पर स्वाध्याय, पूजा-आराधना, व्रत-संयम, तप-त्याग, तपस्या आत्मज्ञान की आराधना के साथ-साथ समस्त विश्व की कल्याण की भावना से मंत्रोच्चारण, जाप, पाठ आदि करते हैं। दसलक्षण महापर्व में विशेष धर्म-आराधना की जाती है।पर्युषण महापर्व के प्रारम्भ में आठ दिन कर्म निर्जरा ज्ञानावरणी, दर्शनावरणीय, वेदनीय, मोहनीय, आयुष्य, नाम, गोत्र एवं अंतराय के बारे में समझकर, तीर्थंकरों की पूजा, स्तुति, प्रतिक्रमण आदि से आराधना की जाती है तत्पश्चात् दशलक्षण महापर्व पर उत्तम क्षमा, मार्दव, आर्जव, शौच, सत्य, संयम,तप,त्याग,आकिंचन्य, ब्रह्मचर्य धर्म के इन दशलक्षणों, गुणों की आराधना की जाती है। मानव मंगल की स्थापना में स्वसत्ता का साक्षात्कार ही दशलक्षण धर्मों की चरमावस्था है। दशलक्षण-पर्युषण पर्वराज किसी व्यक्ति विशेष या घटना विशेष से संबंधित न होकर प्राणीमात्र के पवित्र गुणों से संबंधित है।इन दिनों धर्म के दश लक्षणों पर विशेष श्रद्धा व भक्तिपूर्वक आराधना होती है अतः इसे दशलक्षण पर्वराज, दशलक्षण महापर्व,आत्म शुद्धि, आत्म शोधन,आत्म जागृति, आत्म निरीक्षण,आत्मलोचन, आत्म जागरण,आत्म परिमार्जन, आत्मोपलब्धि एवं स्वात्मोपलब्धि आदि का 'महापर्वराज' पर्युषण महापर्व भी कहते हैं। पर्युषण महापर्व पूर्ण होने के बाद क्षमा रूपी गुण को धारण किए हुए, समस्त सृष्टि से क्षमा याचना करते हुए क्षमावाणी महापर्व मनाया जाता है।

यह पर्व सिखाता है हमको,जग का जग को देते जाओ,
जीवन की नौका हल्की कर,भव सागर से खेते जाओ,
तब निखर उठेगा यह मानस,क्षमा करेगा कंचन सा,
छा जावेगा हमारे जीवन में, शिशु पर माँ के आँचल सा।।

पर्युषण वही है जो आत्मा को निर्मल बनाते हैं और दसलक्षण वही हैं जो जीवन को श्रेष्ठ बनाते हैं।प्रथम दिवस ''उत्तम क्षमा'' का है अतः हम सभी अपने हृदय को स्वच्छ करें और स्वच्छ मन-स्वस्थ जीवन के मूल मंत्र को अपने जीवन में अपनाएं यही हम सभी की भावना होनी चाहिए।

(जाप मंत्र - ऊँ ह्रीं श्रीं उत्तमक्षमाधर्मांगाय नमः)

श्री श्वेताम्बर जैन समाज, मानसरोवर

पर्युषण पारणा महोत्सव शांति एवं भक्ति के साथ धूमधाम से संपन्न

जयपुर. शाबाश इंडिया। पर्युषण महापर्व के पावन समापन के अवसर पर श्री श्वेताम्बर जैन समाज, मीरा मार्ग, मानसरोवर द्वारा आयोजित पारणा महोत्सव बुधवार को धूमधाम, शांति एवं भक्तिभाव के साथ संपन्न हुआ। बुधवार प्रातः 8 बजे से जैन मंदिर प्रांगण, मानसरोवर में तपस्वियों के पारणे के साथ समाजजनों के सामूहिक पारणे का आयोजन किया गया।इस दौरान पूरे मंदिर परिसर में भक्ति, उल्लास एवं धार्मिक वातावरण बना रहा।इस वर्ष पारणे के लाभार्थी बलवंत मल सांड परिवार, निर्मल कुमार सिंघवी परिवार, भूपेन्द्र भण्डारी एवं समस्त जैन समाज रहे।इस पुण्य अवसर पर 450 से अधिक समाजजनों ने पारणा कर धर्मलाभ लिया।बड़ी संख्या में समाजजन उपस्थित रहे और सभी ने तपस्वियों की अनुमोदना करते हुए उनके तप की सराहना की।समाज के अध्यक्ष मिलाप गांधी ने सभी लाभार्थी परिवारों एवं सहयोगी सदस्यों का आभार व्यक्त किया।

उत्तम क्षमा धर्म पर मंगल प्रवचन

क्रोध को हवा में उड़ाने का हुनर सीखने की आवश्यकता : मुनि श्रमण सागर जी

श्रवण संस्कार शिविर का भव्य शुभारंभ

राघौगढ़. शाबाश इंडिया। जैन धर्म के दसलक्षण महापर्व के प्रथम दिन उत्तम क्षमा धर्म पर मंगल प्रवचन करते हुए महान तपस्वी, ओजस्वी वक्ता एवं बुंदेली महाकवि मुनि श्रमण सागर जी महाराज ने कहा, ''करना है तो गुस्से पर गुस्सा करो, गुस्सा करने वाले पर नहीं।'' उन्होंने कहा कि क्रोध मूर्खता से उत्पन्न होता है। जिस समय क्रोध आता है, उस समय आंखों के सामने अंधेरा छा जाता है। यदि क्रोध पर नियंत्रण नहीं किया गया, तो जिंदगीभर उसके कारण दुख सहना पड़ सकता है। मुनिराज ने एक परिवार का उदाहरण देते हुए कहा कि एक परिवार में लॉटरी से एक लाख रुपये मिले। बेटा छोटा और अबोध था। खेलते-खेलते उसने रुपयों की एक गड्डी चूल्हे में डाल दी। बेटे की गलती देखकर मां ने क्रोध में चूल्हे से जलती लकड़ी निकालकर बेटे को जला दिया। कुछ देर बाद बेटे की मृत्यु हो गई। गुस्से में मां ने बेटे की हालत देखकर दूसरी गड्डी भी चूल्हे में डाल दी। यह देखकर पति को भी क्रोध आया और उसने जलती लकड़ी से पत्नी को जला दिया। अंततः वह व्यक्ति स्वयं भी परिवार के साथ नष्ट हो गया। मुनिश्री ने कहा कि क्रोध के कारण परिवार नष्ट हो जाते हैं और जीवनभर दुखों का सामना करना पड़ता है। उन्होंने कहा कि समझदार व्यक्ति वह होता है, जो केवल अपने ज्ञान से ही नहीं, बल्कि दूसरों के अनुभवों से भी सीखता है। धर्मसभा में उन्होंने सभी से आह्वान किया कि अस्पताल के अग्नि-पीड़ित उपचार वार्ड में पड़े खाली पलंग का फोटो खींचकर अपने घर में लगाएं। उस फोटो को देखकर यह आभास होगा कि यदि हमने क्रोध पर नियंत्रण नहीं किया, तो एक दिन हमारी भी ऐसी ही स्थिति हो सकती है। उन्होंने कहा कि उत्तम क्षमा धर्म को केवल आज के दिन ही धारण नहीं करना है, बल्कि दसलक्षण महापर्व हमें 365 दिन उत्तम क्षमा को जीवन में धारण करने की प्रेरणा देता है।

20 युवाओं को बनाया जा रहा है 'विद्याधर'

राघौगढ़ में चातुर्मास कर रहे मुनि श्रमण सागर जी एवं मुनि ओंकार सागर जी महाराज के पावन सान्निध्य में दसलक्षण महापर्व के अवसर पर 15 से 30 वर्ष की आयु के 20 युवाओं को 10 दिनों के लिए 'विद्याधर' बनाकर धर्म-साधना कराने का अनूठा प्रयास किया जा रहा है। इनमें 16 युवक देश के विभिन्न नगरों से आए हैं, जबकि 4 युवक राघौगढ़ के हैं। इसके साथ ही श्रमण संस्कार शिविर के माध्यम से लगभग 110 श्रावक-श्राविकाओं को मुनि संघ के पावन सान्निध्य में धार्मिक एवं संस्कारपरक शिक्षा दी जा रही है। दसलक्षण महापर्व के शुभारंभ अवसर पर प्रातः 5 बजे ध्यान कक्षा, 5:45 बजे गुरु भक्ति तथा 6:15 बजे भगवान का अभिषेक, शांतिधारा एवं सामूहिक पूजन का आयोजन हुआ। सभी मांगलिक क्रियाएं श्रमण संस्कृति संस्थान, सांगानेर से पधारे अनिकेत शास्त्री जी ने संगीत की सुमधुर ध्वनि के बीच संपन्न कराईं। गोटेगांव से सुप्रसिद्ध भजन गायिका सुश्री अंकिता जैन भी संगीत पार्टी के साथ शिविर में पधारी हैं। शिविर के पुण्यार्जक परिवार सिंघई अशोक कुमार, राजेश कुमार, अमित कुमार भारिल्य परिवार ने मुनि द्वय के चरणों में श्रीफल भेंट कर आशीर्वाद प्राप्त किया।

कोटा थर्मल में इंजीनियर्स डे पर सेवानिवृत्त अभियंताओं का हुआ सम्मान

सांस्कृतिक एवं गायन प्रस्तुतियों ने बांधा समां

✍ आजाद शेरवानी

कोटा. शाबाश इंडिया। इंजीनियर्स डे के अवसर पर मंगलवार को कोटा थर्मल के न्यू कम्युनिटी सेंटर में थर्मल इंजीनियर्स एसोसिएशन ऑफ आरआरवीयूएनएल (टीयर) के तत्वावधान में भव्य एवं गरिमामय समारोह आयोजित किया गया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि इंजीनियर के.एल. मीणा, निदेशक (प्रोजेक्ट), तथा विशिष्ट अतिथि इंजीनियर शिखा अग्रवाल, मुख्य अभियंता, कोटा थर्मल रहीं। कार्यक्रम का शुभारंभ मुख्य अतिथि एवं विशिष्ट अतिथि ने दीप प्रज्वलित कर किया। इस अवसर पर दोनों अतिथियों का प्रेरणादायी उद्बोधन एवं मार्गदर्शन उपस्थित अभियंताओं के लिए विशेष रूप से प्रेरणास्पद रहा। उन्होंने इंजीनियरिंग क्षेत्र में तकनीकी दक्षता, नवाचार, समर्पण एवं टीम भावना के महत्व पर प्रकाश डालते हुए अभियंताओं को अपने दायित्वों का उत्कृष्टता के साथ निर्वहन करने के लिए प्रेरित किया। समारोह में कोटा थर्मल से सेवानिवृत्त अभियंताओं का

सम्मान कर उनके दीर्घकालीन योगदान एवं सेवाओं के प्रति सम्मान और कृतज्ञता व्यक्त की गई। इसके पश्चात आयोजित विभिन्न सांस्कृतिक कार्यक्रमों एवं मनमोहक गायन प्रस्तुतियों ने समारोह में चार चांद लगा दिए। अभियंताओं की प्रतिभाओं से सजी इन प्रस्तुतियों ने उपस्थित लोगों का मन मोह लिया और कार्यक्रम को यादगार बना दिया। टीयर के अध्यक्ष इंजीनियर राजीव लोहमी ने सभी अतिथियों का स्वागत एवं अभिनंदन किया। वहीं, टीयर के महासचिव इंजीनियर हेमंत नागर ने कार्यक्रम के सफल आयोजन एवं उत्साहपूर्ण सहभागिता के लिए सभी अतिथियों, आयोजन समिति के सदस्यों तथा थर्मल प्रशासन का आभार व्यक्त किया। इस अवसर पर उप मुख्य अभियंता आर.पी. मीणा, आर.के. मंत्री, अशोक चलाना, सुनीता जैन, रवि प्रकाश विजय, निशा झा, सनत शेषमा, नरेन्द्र कुमार सहित अन्य वरिष्ठ अधिकारी एवं टीयर कार्यकारिणी के सदस्य उपस्थित रहे। सांस्कृतिक कार्यक्रमों में निशांत शर्मा, मनीष महावर, प्रशांत शर्मा, शिखा शर्मा, प्रज्ञा गहलोत, मनीषा आर्य, शालिनी शर्मा, प्रियंका नागर, हर्षिता, नेहल राठौर, सत्येंद्र वैष्णव, जी.पी. शर्मा, के.के. राघव, तरुण खत्री, गिरिश नागर, स्नेहा यादव एवं हरदीप कौर ने गायन प्रस्तुतियां दीं। समारोह का वातावरण सम्मान, उत्साह, सौहार्द एवं इंजीनियरिंग समुदाय की एकजुटता से सराबोर रहा। अंततः कार्यक्रम सफलतापूर्वक संपन्न हुआ।

इंजीनियर्स डे समारोह आयोजित

इंजीनियर फोरम सागर के नए अध्यक्ष चुने गए इंजी. प्रासुक सांघेलिया

रत्नेश जैन रागी, बकस्वाहा

सागर. शाबाश इंडिया। इंजीनियर फोरम सागर द्वारा मंगलवार को मकरोनिया स्थित एक होटल में इंजीनियर्स डे समारोह हर्षोल्लास एवं गरिमामय वातावरण में आयोजित किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ वरिष्ठ इंजीनियरों द्वारा दीप प्रज्वलन, गणेश पूजन एवं भारत के महान अभियंता, भारत रत्न सर मोक्षगुंडम विश्वेश्वरैया के चित्र पर माल्यार्पण के साथ किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता इंजी. प्रकाश चौबे एवं इंजी. राजेंद्र सिलाकारी ने की। इस अवसर पर इंजी. अवधेश पांडे ने सर एम. विश्वेश्वरैया के जीवन, व्यक्तित्व एवं राष्ट्र निर्माण में उनके महत्वपूर्ण योगदान पर प्रकाश डाला। कार्यक्रम का मंच संचालन इंजी. संजीव चौरसिया एवं इंजी. विवेक श्रीवास्तव ने किया। वहीं, इंजी. अंकित नामदेव ने स्वागत उद्बोधन देते हुए समारोह में उपस्थित सभी इंजीनियरों का स्वागत किया। समारोह के दौरान इंजी. प्रासुक सांघेलिया को इंजीनियर फोरम सागर का नया अध्यक्ष चुना गया। अध्यक्ष चुने जाने पर उपस्थित इंजीनियरों ने उन्हें बधाई एवं शुभकामनाएं दीं। वहीं, जैन तीर्थ नैनागिरि के अध्यक्ष सुरेश जैन आईएएस, मंत्री राजेश जैन रागी, देवेन्द्र लुहारी सहित विभिन्न संस्थाओं के पदाधिकारियों ने भी उन्हें बधाई एवं शुभकामनाएं प्रेषित करते हुए उज्वल भविष्य की कामना की। नवनिर्वाचित अध्यक्ष इंजी. प्रासुक सांघेलिया ने इंजीनियर फोरम को और अधिक सक्रिय एवं मजबूत बनाने तथा इंजीनियरों के हित में सभी सदस्यों के साथ मिलकर कार्य करने की प्रतिबद्धता व्यक्त की। कार्यक्रम में विशिष्ट अतिथि के रूप में इंजी. महेंद्र यादव, इंजी. जितेंद्र तिवारी एवं इंजी. कमल सोनी विशेष रूप से उपस्थित रहे। इसके अलावा कल्पधाम ग्रुप के डायरेक्टर पुरुषोत्तम चौरसिया, सारांश गौतम एवं कैलाश चौरसिया तथा लंबरदार बिल्डर से इंजी. विजय कुशवाहा उपस्थित रहे। इस अवसर पर इंजी. राजेश मिश्रा, इंजी. संजीव जैन, इंजी. राजीव चौरसिया, इंजी. राजेश शर्मा, इंजी. राजेश सोनी, इंजी. राजकुमार नामदेव, इंजी. राहुल चौबे, इंजी. अमन जैन, इंजी. सजल सराफ, इंजी. आशीष साहू, इंजी. अंकुर नायक सहित बड़ी संख्या में इंजीनियर उपस्थित रहे। समारोह के दौरान इंजीनियर्स डे के महत्व पर चर्चा की गई। उपस्थित इंजीनियरों ने समाज एवं राष्ट्र के विकास में अपनी तकनीकी दक्षता, ज्ञान एवं जिम्मेदारी के साथ योगदान देने का संकल्प लिया। इंजीनियर फोरम सागर का यह आयोजन इंजीनियर समुदाय की एकजुटता, तकनीकी क्षमता एवं सामाजिक उत्तरदायित्व को मजबूत करने की दिशा में महत्वपूर्ण पहल के रूप में रहा।

क्रोध जहर है, क्षमा अमृत है-आत्मा का स्वभाव है : आचार्य श्री वर्धमान सागर जी

जयपुर. शाबाश इंडिया

इच्छा के विपरीत अथवा प्रतिकूल कार्य होने पर क्रोध उत्पन्न होता है। क्रोध से स्वयं का नाश होता है, क्योंकि क्रोध महाअग्नि के समान है, जो सबसे पहले स्वयं को ही जलाती है। क्रोध से तनाव उत्पन्न होता है और तनाव से बीमारियां बढ़ती हैं। इसलिए सभी को क्षमा धारण करनी चाहिए। क्षमा से पुण्य का अर्जन होता है और पाप कर्मों का क्षय होता है। क्षमा वीरों का आभूषण है। धार्मिक पर्वों को तन्मयता, आंतरिक आनंद, श्रद्धा एवं भक्ति के साथ मनाने से मन को शांति प्राप्त होती है और शांति से मुक्ति की राह प्रशस्त होती है। देखा जाए तो क्षमा विश्वशांति का महापर्व है। यह मंगल धर्मदेशना आचार्य धर्मसागर सभागृह, दांग की नसियां में आचार्य श्री वर्धमान सागर जी महाराज ने उत्तम क्षमा धर्म पर प्रवचन करते हुए दी। डा. राजेश पंचोलिया ने बताया कि आचार्य श्री ने क्षमा के अनेक उदाहरण प्रस्तुत किए। उन्होंने प्रथमाचार्य श्री शांतिसागर जी महाराज के राजाखेड़ा प्रवास का प्रसंग सुनाते हुए बताया कि उस समय कुछ विधर्मी व्यक्तियों ने आचार्य श्री के संघ पर प्राणघातक हमला कर दिया था। आचार्य श्री ने बताया कि जिन जीवों का पुण्य प्रबल होता है, उन्हें भविष्य में आने वाले संकट का पूर्वाभास हो जाता है। आचार्य श्री को अपने तपोबल एवं प्राकृतिक परिस्थितियों से किसी अनिष्ट की संभावना का संकेत मिला था। इसलिए उन्होंने संघ को भीतर कमरे में बैठकर धार्मिक कार्य करने का निर्देश दिया। हमलावरों का समाजजनों ने प्रतिकार किया और पुलिस ने उन्हें पकड़ लिया। इसके बावजूद आचार्य श्री ने हमलावरों को क्षमा कर दिया। आचार्य श्री ने कहा कि क्रोध के कारण द्वारिका नगरी तक नष्ट हो गई। क्षमा आत्मा का स्वभाव है। क्षमा केवल दूसरों से ही नहीं, बल्कि स्वयं से, परिवार से और समाज से भी रखनी चाहिए।

धार्मिक आयोजनों में उमड़ा श्रद्धा का भाव

इसके पूर्व प्रातःकाल आचार्य श्री के सान्निध्य में श्रीजी का पंचामृत अभिषेक एवं शांतिधारा विनायका परिवार द्वारा की गई। दसलक्षण धर्म का मंडल विधान विभिन्न प्रकार के अनाजों से सुंदर रूप से तैयार किया गया है, जिस पर प्रतिदिन अर्घ्य समर्पित किए जाते हैं। धर्मसभा में आचार्य श्री के चरण-प्रक्षालन किए गए तथा सौभाग्यशाली परिवार द्वारा जिनवाणी भेंट की गई। दोपहर में आचार्य श्री ने तत्त्वार्थसूत्र की विवेचना करते हुए बताया कि सम्यक दर्शन, सम्यक ज्ञान और सम्यक चारित्र ही मोक्ष का मार्ग हैं। उन्होंने सात तत्त्वों तथा ज्ञान के पांच भेद–मति ज्ञान, श्रुत ज्ञान, अवधि ज्ञान, मनःपर्यय ज्ञान एवं केवल ज्ञान–की विस्तार से विवेचना की। शाम को श्रीजी एवं आचार्य श्री की आरती के पश्चात ज्ञानवर्धक धार्मिक प्रतियोगिता का आयोजन किया जा रहा है।

गणेश महोत्सव के दूसरे दिन रूपाली मेहता के भजनों पर झूमे श्रद्धालु

मनमोहक झांकियों ने मोहा मन

हिसार/बरवाला, राजेश सलूजा। ''आओ मिलकर साथ चलें'' युवा संगठन (रजि. 1080) के तत्वावधान में दौलतपुर रोड स्थित नगर परिषद के वाइस चेयरमैन ताराचन्द नलवा के कार्यालय परिसर में आयोजित पांचवें विशाल श्री गणेश महोत्सव के दूसरे दिन श्रद्धालुओं की भारी भीड़ उमड़ी। कार्यक्रम में समाजसेवी आयुष शर्मा मुख्य अतिथि के रूप में शामिल हुए और भगवान श्री गणेश के समक्ष दीप प्रज्वलित कर आशीर्वाद लिया। दूसरी संध्या में सुप्रसिद्ध भजन गायिका रूपाली मेहता ने मधुर भजनों की प्रस्तुति देकर श्रद्धालुओं को भाव-विभोर कर दिया। मनमोहक धार्मिक झांकियों ने भी भक्तों का मन मोह लिया और पंडाल ''गणपति बप्पा मोरया'' के जयकारों से गूंज उठा। मंच संचालन इंद्रजीत शेखावत ने किया। आयोजक मंडल एवं ताराचन्द नलवा ने मुख्य अतिथि आयुष शर्मा और रूपाली मेहता को स्मृति चिह्न भेंट कर सम्मानित किया। अंत में भव्य आरती के बाद प्रसाद वितरित किया गया।

अवधपुरी के पद्मप्रभु जिनालय में दशलक्षण महापर्व का भक्तिमय शुभारंभ

श्रीजी का अभिषेक-शांतिधारा, ध्वजारोहण एवं उत्तम क्षमा धर्म की पूजन

आगरा. शाबाश इंडिया। श्री पद्मप्रभु जिनालय, अवधपुरी में दशलक्षण महापर्व का भक्तिमय शुभारंभ हुआ। महापर्व के प्रथम दिन 16 सितंबर को प्रातः श्रद्धालुओं ने भक्ति एवं उत्साह के साथ विभिन्न धार्मिक कार्यक्रमों में सहभागिता की। महापर्व के शुभारंभ अवसर पर श्रीजी का अभिषेक एवं शांतिधारा संपन्न हुई। इसके पश्चात सौभाग्यशाली परिवारों द्वारा ध्वजारोहण किया गया, वहीं महिलाओं ने मंडल पर मंगल कलश की स्थापना की। विधि-विधान एवं मंत्रोच्चार के बीच हुए धार्मिक अनुष्ठानों से मंदिर परिसर भक्तिमय वातावरण से गूंज उठा। श्रद्धालुओं ने अष्टद्रव्यों के साथ उत्तम क्षमा धर्म की पूजन कर विधान की मांगलिक क्रियाएं संपन्न कीं। इस अवसर पर श्रद्धालुओं ने उत्तम क्षमा धर्म के माध्यम से आत्मशुद्धि, संयम एवं आपसी मैत्री का संदेश ग्रहण किया। कार्यक्रम में पंडित विवेक जैन शास्त्री ने उत्तम क्षमा धर्म के महत्व पर प्रकाश डालते हुए कहा कि क्षमा आत्मशुद्धि का माध्यम है। मनुष्य को क्रोध, मान एवं अहंकार का त्याग कर सभी जीवों के प्रति मैत्रीभाव रखना चाहिए। सायंकाल श्रद्धालुओं ने भक्तिभाव से श्रीजी की मंगल आरती की। वहीं, बच्चों के लिए फैंसी ड्रेस प्रतियोगिता आयोजित की गई, जिसमें बच्चों ने विभिन्न धार्मिक एवं प्रेरणादायी स्वरूपों में आकर्षक प्रस्तुतियां दीं। मीडिया प्रभारी शुभम जैन ने बताया कि आगरा के समस्त जैन मंदिरों में 16 से 25 सितंबर तक दशलक्षण महापर्व के दौरान दस धर्मों की आराधना के साथ विभिन्न धार्मिक एवं सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित किए जाएंगे।

5 वर्षीय गीतिका जैन ने एरियल हूप में रचा इतिहास

इंडिया बुक ऑफ रिकॉर्ड्स में दर्ज कराया नाम

भीलवाड़ा। भीलवाड़ा की महज 5 वर्ष 8 माह 24 दिन की प्रतिभावान बालिका गीतिका जैन ने एरियल हूप के क्षेत्र में उल्लेखनीय उपलब्धि हासिल करते हुए इंडिया बुक ऑफ रिकॉर्ड्स में अपना नाम दर्ज कराया है। गीतिका ने लायरा पोजीशन (Lyra Position) में एरियल हूप रोटेशन का रिकॉर्ड बनाकर अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन किया।एक हाथ और एक पैर के सहारे एरियल हूप में प्रदर्शनरिकॉर्ड प्रदर्शन के दौरान गीतिका ने एरियल हूप में लायरा पोजीशन अपनाते हुए एक हाथ और एक पैर के सहारे संतुलन बनाए रखा। इतनी कम उम्र में संतुलन, एकाग्रता और तकनीकी कौशल का यह प्रदर्शन गीतिका के नियमित अभ्यास और प्रशिक्षण को दर्शाता है।इंडिया बुक ऑफ रिकॉर्ड्स के आधिकारिक दस्तावेजों के अनुसार, उनके रिकॉर्ड की पुष्टि 12 सितंबर 2026 को की गई। Arjun Dance School में दो वर्षों से प्रशिक्षणगीतिका Arjun Dance School (ADS®) की छात्रा हैं और पिछले करीब दो वर्षों से एरियल हूप का नियमित प्रशिक्षण ले रही हैं। ADS® के संस्थापक एवं निदेशक श्री अर्जुन वसिता ने गीतिका को इस

उपलब्धि पर बधाई देते हुए कहा कि निरंतर अभ्यास, अनुशासन, आत्मविश्वास और समर्पण ने उन्हें इस मुकाम तक पहुंचाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। गीतिका ने फरीदाबाद स्थित इंडिया बुक ऑफ रिकॉर्ड्स कार्यालय में अपने रिकॉर्ड का प्रदर्शन किया, जिसके बाद उनकी उपलब्धि को आधिकारिक रूप से रिकॉर्ड में शामिल किया गया।परिवार व समाज में खुशी का माहौल। गीतिका जैन, आयुष जैन और मीनाक्षी जैन की पुत्री हैं। उनकी इस उपलब्धि से उनके दादा श्री कांति कुमार जैन सहित पूरे परिवार और ADS® परिवार में खुशी का माहौल है। स्थानीय स्तर पर भी गीतिका को बधाइयां मिल रही हैं। परिवार ने कहा कि यह उपलब्धि गीतिका की मेहनत, लगन, नियमित अभ्यास और कुछ अलग कर दिखाने के जज्बे का परिणाम है। उन्होंने उम्मीद जताई कि गीतिका भविष्य में भी इसी तरह अपने हुनर को निखारते हुए आगे बढ़ेंगी छोटी उम्र में बड़ी प्रेरणागीतिका जैन की उपलब्धि यह संदेश देती है कि बच्चों को उनकी रुचि के क्षेत्र में सही मार्गदर्शन, सुरक्षित प्रशिक्षण और निरंतर अभ्यास मिले तो वे कम उम्र में भी उल्लेखनीय उपलब्धियां हासिल कर सकते हैं। उनकी सफलता ने भीलवाड़ा और Arjun Dance School को गौरवान्वित किया है और अन्य बच्चों को अपने हुनर को पहचानने तथा मेहनत के साथ आगे बढ़ने की प्रेरणा दी है। प्रकाशनार्थ हेतु।

प्रकाश पाटनी: भीलवाड़ा

जैन इंजीनियर्स सोसाइटी ने इंजीनियर्स डे पर किया वृक्षारोपण

फलों के 21 पौधे रोपित किए

फरीदाबाद. शाबाश इंडिया

भारत के महान अभियंता एवं भारत रत्न सर मोक्षगुंडम विश्वेश्वरैया की जयंती के उपलक्ष्य में जैन इंजीनियर्स सोसाइटी (जेईएस), फरीदाबाद द्वारा अमृता ऑर्गेनिक फार्म हाउस में वृक्षारोपण कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस दौरान आम, अमरूद, मौसमी, नींबू, अनार, शहतूत सहित विभिन्न फलदार प्रजातियों के 21 पौधे रोपित किए गए। कार्यक्रम में जेईएस के पदाधिकारी इंजी. अरुण जैन, धन कुमार जैन, एस.के. जैन, इंजी. गौरव, इंजी. कर्नल गोपालकृष्णन, स्वामी एकमृतानंद चैतन्य जी, डॉ. आकांक्षा जैन सहित अन्य उपस्थित लोगों ने पौधारोपण किया। इस अवसर पर वक्ताओं ने कहा कि आज लगाए गए ये छोटे-छोटे पौधे भविष्य में विशाल फलदार वृक्ष बनकर जन-जन को स्वास्थ्यवर्धक फल प्रदान करेंगे। ये वृक्ष आने वाली पीढ़ियों के लिए भी उपयोगी सिद्ध होंगे। उन्होंने लगाए गए सभी पौधों के संरक्षण एवं नियमित देखभाल का संकल्प लिया। ज्ञातव्य है कि जेईएस, वर्धमान महावीर सेवा समिति, सखी सेवा संस्थान एवं अमृता पाठशाला द्वारा संयुक्त रूप से आयोजित यह पांचवां वृक्षारोपण कार्यक्रम था। इससे पूर्व अमृता हॉस्पिटल परिसर में 108 वृक्ष, सेक्टर-100 स्थित कृष्ण मंदिर में 21 फलदार वृक्ष, अमृता पाठशाला परिसर तथा आराध्य धाम परिसर के पार्क में वृक्षारोपण किया जा चुका है। इन सभी आयोजनों में डॉ. सुभाष जैन 'गुरुजी', डॉ. आकांक्षा जैन, श्रीमती रिया जैन एवं सुरेंद्र जैन का आर्थिक सहयोग रहा। वहीं, छोटी बच्ची आदिरा की सक्रिय सहभागिता ने कार्यक्रम में विशेष उत्साह का संचार किया। कार्यक्रम में अमृता पाठशाला के ऊर्जावान बच्चों ने भी उत्साहपूर्वक भाग लिया। कार्यक्रम के पश्चात जलपान की व्यवस्था की गई। संस्था के महासचिव इंजी. धन कुमार जैन ने स्वामी एकमृतानंद चैतन्य जी, कर्नल गोपालकृष्णन, डॉ. आकांक्षा जैन एवं अमृता पाठशाला के बच्चों सहित सभी सहयोगियों का आभार व्यक्त किया।

दशलक्षण महापर्व का भव्य शुभारंभ, जिनालयों में उमड़ा श्रद्धा का सैलाब

प्रथम दिन उत्तम क्षमा धर्म की आराधना, अभिषेक-शांतिधारा के साथ शुरू हुआ दस दिवसीय आध्यात्मिक महोत्सव

ब्यावर. शाबाश इंडिया। श्री दिगंबर जैन समाज के दस दिवसीय पावन दशलक्षण महापर्व का शुभारंभ बुधवार को धार्मिक उल्लास, श्रद्धा एवं भक्तिभाव के साथ हुआ। महापर्व के प्रथम दिन उत्तम क्षमा धर्म की आराधना की गई। पर्व को लेकर शहर के विभिन्न जैन मंदिरों में सुबह से ही श्रद्धालुओं की चहल-पहल रही और जिनालय भक्तिमय वातावरण से गूंज उठे।

स्वर्ण कलश से हुआ भगवान महावीर का अभिषेक

महापर्व की शुरूआत प्रातःकाल विभिन्न जिनालयों में अभिषेक एवं शांतिधारा के साथ हुई। श्री दिगंबर जैन पंचायती नसियांजी में मूलनायक श्री महावीर स्वामी भगवान का स्वर्ण कलश से अभिषेक किया गया। इसके बाद श्रावक-श्राविकाओं ने भगवान की विशेष पूजा-अर्चना कर उत्तम क्षमा धर्म की आराधना की। पूजा के दौरान जिनालयों में धार्मिक मंत्रोच्चार एवं भक्तिमय वातावरण देखने को मिला। श्रद्धालुओं ने भगवान के समक्ष अपने जीवन में क्षमा, संयम एवं समता के भाव को अपनाने का संकल्प लिया।

तत्वार्थसूत्र एवं दशलक्षण धर्म पर हुए विशेष प्रवचन

महापर्व के अवसर पर श्री दिगंबर जैन श्रमण संस्कृति संस्थान, सांगानेर (जयपुर) से पधारे विद्वान प्राचार्य एवं नगर गौरव श्री अरुण कुमार जैन शास्त्री ने तत्वार्थसूत्र एवं दशलक्षण धर्म पर विशेष प्रवचन दिए। शास्त्री जी ने श्रद्धालुओं को तत्वार्थसूत्र का अध्ययन कराते हुए दशलक्षण धर्म के आध्यात्मिक एवं व्यावहारिक महत्व को समझाया। उन्होंने कहा कि दशलक्षण महापर्व आत्मशुद्धि, आत्मचिंतन एवं अपने भीतर के विकारों को दूर करने का अवसर प्रदान करता है।

दसलक्षण धर्म के प्रथम दिन उत्तम क्षमा धर्म पर विशेष शांति धारा एवं अभिषेक कार्यक्रम

नौगामा. शाबाश इंडिया

नौगामा में दसलक्षण महापर्व के प्रथम दिन उत्तम क्षमा धर्म के पावन अवसर पर आदिनाथ मंदिर, भगवान महावीर समवशरण मंदिर एवं सुखोदय तीर्थ नसिया जी में विशेष शांतिधारा एवं अभिषेक कार्यक्रम श्रद्धा एवं भक्तिभाव के साथ आयोजित किए गए। अभिषेक के पश्चात आदिनाथ मंदिर से श्रीजी को गाजे-बाजे के साथ भव्य शोभायात्रा के रूप में पंडाल में लाकर विराजमान किया गया। प्रथम अभिषेक करने का सौभाग्य गांधी दीपेश कुमार एवं दिनेश को प्राप्त हुआ। इसके पश्चात ध्वजारोहण किया गया, जिसका सौभाग्य महावीर ट्रेडर्स को प्राप्त हुआ। भोपाल के प्रसिद्ध गीतकार राजेंद्र जैन सांगानेर, संस्थान से पधारे अभिषेक शास्त्री एवं विधानाचार्य रमेश चंद्र गांधी तथा दृष्टि दीदी एवं वीना दीदी के सान्निध्य में धार्मिक कार्यक्रम संपन्न हुए। वाद्य यंत्रों की मधुर स्वर लहरियों के बीच उत्तम क्षमा धर्म के अर्घ्य समर्पित किए गए। साथ ही देव-शास्त्र-गुरु पूजन एवं सरस्वती पूजन के अर्घ्य भी चढ़ाए गए। दोपहर में तत्त्वार्थसूत्र पर आधारित ''जैन भूगोल'' विषय पर मंगल प्रवचन हुआ। शाम को आचार्य भक्ति एवं महाआरती का आयोजन किया गया। महाआरती करने का प्रथम सौभाग्य पिंडारमिया राजेश कुमार को प्राप्त हुआ। इसके पश्चात भैया जी द्वारा प्रतिक्रमण एवं उत्तम क्षमा धर्म पर मंगल प्रवचन किया गया। प्रवचन के बाद प्रश्न मंच का आयोजन हुआ। जैन पाठशाला के बच्चों ने मनीषा नानावटी के सान्निध्य में महाभारत नाटिका का भावपूर्ण मंचन किया। कार्यक्रम के अंत में जैन समाज अध्यक्ष विपुल पंचोली एवं नवयुग मंडल अध्यक्ष मुकेश गांधी ने सभी श्रद्धालुओं तथा आयोजन में सहयोग करने वाले सदस्यों का आभार व्यक्त किया। उक्त जानकारी जैन समाज प्रवक्ता सुरेश चंद्र गांधी ने दी।

दसलक्षण महापर्व के प्रथम दिवस उत्तम क्षमा धर्म की पूजन

चौमूं. शाबाश इंडिया

शहर स्थित चंद्रप्रभु-शांतिनाथ-पारसनाथ दिगंबर जैन मंदिर में सकल दिगंबर जैन समाज द्वारा दसलक्षण महापर्व के प्रथम दिवस विभिन्न धार्मिक कार्यक्रम आयोजित किए गए। प्रातःकाल अभिषेक, शांतिधारा एवं उत्तम क्षमा धर्म की पूजन विधि-विधान एवं भक्तिभाव के साथ संपन्न हुई। जैन समाज प्रवक्ता पंकज बड़जात्या ने बताया कि प्रथम दिवस शांतिधारा करने का सौभाग्य सौधर्म इंद्र राजेंद्र पाटनी एवं पदमचंद, संजीव कुमार तथा संदीप कुमार बड़जात्या को प्राप्त हुआ। चंद्रप्रभु जैन मंदिर में अभिषेक एवं शांतिधारा का सौभाग्य निहालचंद, राकेश कुमार एवं पंकज कुमार जैन को प्राप्त हुआ। श्री नंदीश्वरमति माताजी एवं करुणा दीदी के सान्निध्य में दसलक्षण महापर्व के प्रथम दिन उत्तम क्षमा धर्म की पूजन की गई। ध्वजारोहण का सौभाग्य धन कुमार, अनिल कुमार एवं मनोज कुमार बड़जात्या को प्राप्त हुआ। शास्त्र भेंट, पाद-प्रक्षालन एवं दीप

प्रज्वलन का सौभाग्य विनोद कुमार एवं विवेक कुमार चौधरी को प्राप्त हुआ। कुबेर के रूप में अनिल जैन तथा यज्ञनायक के रूप में नरेश पहाड़िया को सौभाग्य प्राप्त हुआ। अन्य इंद्रों के रूप में मुकेश चौधरी, मुकेश पाटनी, विनोद कासलीवाल, नवरत्न कयाल, फूलचंद कासलीवाल, हीरालाल जैन, भागचंद चंद गोघा, सुनील पारस पाटनी, पदमचंद बड़जात्या, निहालचंद चौधरी, राजेंद्र कयाल, अशोक चौधरी सहित अन्य श्रद्धालु शामिल रहे। पंचतंत्र क्रिया में पंकज बड़जात्या, सुमन देवी पहाड़िया, उषा कासलीवाल, उषा पाटनी एवं जय कुमार नाथूसर ने सहभागिता की। प्रातिहार्य क्रियाओं में प्रमोद जैन, संजय जैन, मूलचंद जी एवं विमल सोगानी सहित अन्य श्रद्धालुओं को सौभाग्य प्राप्त हुआ। शाम को महाआरती का सौभाग्य मालचंद, लालचंद एवं ज्ञानचंद जैन को प्राप्त हुआ। इसके बाद मंडली द्वारा आरती, भजन, मंत्र जाप एवं नाटिका कार्यक्रम प्रस्तुत किए गए। इन सभी कार्यक्रमों के दौरान जैन समाज के वरिष्ठ नागरिक मोतीलाल जैन, अजय जैन, नरेंद्र जैन, सुरेंद्र जैन, महेंद्र, कैलाश, महावीर एवं पदम पाटनी सहित बड़ी संख्या में श्रावक-श्राविकाएं उपस्थित रहे। जैन समाज अध्यक्ष राजेंद्र जैन ने बताया कि मंडल जी में कलश स्थापना का सौभाग्य अनिल जैन, सुनील जैन, प्रमोद जैन, जयपुर से हिमानी जैन एवं सौधर्म इंद्र राजेंद्र पाटनी को प्राप्त हुआ। वहीं, 10 दिवसीय अखंड दीप प्रज्वलन का सौभाग्य अनिल जैन को प्राप्त हुआ। दसलक्षण महापर्व के दौरान प्रतिदिन नंदीश्वरमति माताजी के सान्निध्य में धार्मिक एवं सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित किए जाएंगे। स्थानीय कलाकारों एवं बाहर से पधारी मंडलियों द्वारा सांस्कृतिक प्रस्तुतियों के साथ वाद्य यंत्रों की मधुर ध्वनि के बीच पूजन कार्यक्रम भी संपन्न होंगे।

निःशुल्क नेफ्रोलॉजी चिकित्सा परामर्श एवं जांच शिविर आयोजित

जयपुर। AMRC पार्क हॉस्पिटल एवं ह्यूमन ग्लोरी फाउंडेशन ट्रस्ट (रजि.) के संयुक्त तत्वावधान में आज निःशुल्क नेफ्रोलॉजी चिकित्सा परामर्श एवं जांच शिविर का आयोजन किया गया। शिविर में किडनी से संबंधित विभिन्न समस्याओं से पीड़ित मरीजों को विशेषज्ञ चिकित्सकीय परामर्श एवं आवश्यक जांच की सुविधा उपलब्ध कराई गई।शिविर में डॉ. आलोक जैन, MD (Medicine), DM (Nephrology), डायरेक्टर—नेफ्रोलॉजी एवं किडनी ट्रांसप्लांट ने मरीजों की जांच कर उन्हें आवश्यक चिकित्सकीय परामर्श दिया। उन्होंने किडनी रोगों से बचाव, लक्षणों की पहचान एवं समय पर उपचार के महत्व के बारे में जानकारी दी।कार्यक्रम में मुख्य अतिथि श्रीमती कुसुम यादव, निवर्तमान महापौर, नगर निगम जयपुर हेरिटेज ने अपने उद्बोधन में पार्क हॉस्पिटल द्वारा स्वास्थ्य क्षेत्र में किए जा रहे कार्यों की सराहना की। उन्होंने कहा कि इस प्रकार के निःशुल्क चिकित्सा एवं जांच शिविर लोगों के लिए बेहद उपयोगी हैं। उन्होंने पार्क हॉस्पिटल एवं ह्यूमन ग्लोरी फाउंडेशन ट्रस्ट की इस पहल को सामाजिक सरोकार की दिशा में महत्वपूर्ण कदम बताया।इस अवसर पर AMRC पार्क हॉस्पिटल की CEO डॉ. रितु चौधरी एवं पार्क हॉस्पिटल के जनरल मैनेजर डॉ. राम अग्रवाल भी उपस्थित रहे। उन्होंने शिविर की व्यवस्थाओं एवं आयोजन की सराहना की तथा लोगों तक विशेषज्ञ चिकित्सा सेवाएं पहुंचाने के प्रयासों को महत्वपूर्ण बताया।कार्यक्रम में ह्यूमन ग्लोरी फाउंडेशन ट्रस्ट के संस्थापक अध्यक्ष प्रमोद जैन भंवर, कोषाध्यक्ष मनीषा जैन, वरिष्ठ उपाध्यक्ष आशा शर्मा सचिव ह्यूमन ग्लोरी वीमेंस क्लब उपमा सारस्वत , अनंत जैन उपस्थित रहे। शिविर में बड़ी संख्या में लोगों ने पहुंचकर किडनी संबंधी स्वास्थ्य सेवाओं एवं विशेषज्ञ चिकित्सकीय परामर्श का लाभ उठाया। आयोजकों ने बताया कि ऐसे स्वास्थ्य शिविरों का उद्देश्य आमजन में किडनी रोगों के प्रति जागरूकता बढ़ाने के साथ-साथ जरूरतमंद लोगों को समय पर चिकित्सा सुविधा उपलब्ध कराना है।

उत्तम मार्दव धर्म : दूसरा दिन

डॉ. अल्पना जैनः महाराष्ट्र गौरव, मालेगांव

मिटा कर मन का 'मान' जो, अंतस में सरलता लाता है,
जैन सिद्धांत के अनुसार, वही उत्तम मार्दव कहलाता है।

धन, वैभव और रूप का यह घमंड तो बस एक छाया है,
आचार्य विद्यासागर जी कहते, 'मैं' ही दुखों की माया है।

जैसे फल से लदी डालियां, झुककर अपनी मर्यादा दिखाती हैं,
वैसे ही ज्ञानी जनों की आंखें, सदा विनय से झुक जाती हैं।

अहंकार की कठोर चट्टान पर, कभी धर्म का अंकुर नहीं उगता,
मोक्ष मार्ग पर केवल वही बढ़ता, जो प्रभु चरणों में है झुकता।

आओ इस द्वितीय दिवस पर, हम सब अपनी मति को शुद्ध करें,
अहंकार का त्याग कर, मन को मार्दव गुण से समृद्ध करें।

दशलक्षण महापर्व का श्रद्धा-भक्ति के साथ शुभारंभ

81 श्रावक-श्राविकाओं ने किया श्रीजी का कलशाभिषेक, मंदिर में गूंजे भक्तिमय जयकारे

कुचामन सिटी. शाबाश इंडिया

दिगंबर जैन धर्मावलंबियों के आत्मशुद्धि, संयम, त्याग एवं सद्गुणों की साधना के पावन पर्व दशलक्षण महापर्व का बुधवार को श्रद्धा एवं भक्तिभाव के साथ शुभारंभ हुआ। भाद्रपद शुक्ल पंचमी से चतुर्दशी तक चलने वाले इस महापर्व में श्रद्धालु उत्तम क्षमा, उत्तम मार्दव, उत्तम आर्जव, उत्तम शौच, उत्तम सत्य, उत्तम संयम, उत्तम तप, उत्तम त्याग, उत्तम आकिंचन्य एवं उत्तम ब्रह्मचर्य–इन दस धर्मों की आराधना करते हैं। कुचामन सिटी के डीडवाना रोड स्थित 1008 भगवान महावीर दिगंबर जैन मंदिर में दशलक्षण महापर्व के शुभारंभ अवसर पर ध्वजारोहण एवं कलश स्थापना का आयोजन किया गया। ध्वजारोहण एवं कलश स्थापना का पुण्यार्जन श्री चिरंजी लाल, हीरामणी, अशोक एवं भव्य पाटोदी परिवार ने प्राप्त किया। दीप प्रज्वलन का सौभाग्य भंवरलाल, कमला देवी, जुली एवं आशीष झाझरी परिवार को प्राप्त हुआ। इस अवसर पर 81 श्रावक-श्राविकाओं ने श्रीजी का कलशाभिषेक कर पुण्यार्जन किया। भगवान के अभिषेक एवं शांतिधारा के दौरान मंदिर परिसर भक्तिमय वातावरण से गूंज उठा। लालचंद पहाड़िया एवं अमित पाटोदी ने बताया कि शांतिधारा का पुण्यार्जन सुरेशकुमार-संदीप पांड्या परिवार, तेजकुमार-पंकज बड़जात्या परिवार, चिरंजी लाल-अशोक कुमार पाटोदी परिवार एवं कमल कुमार-बाबूलाल बज परिवार को प्राप्त हुआ। मंडलजी पर चार कलश स्थापना का पुण्यार्जन ललित कुमार, लेखराज पहाड़िया, लालचंद-अनिष अजमेरा, दिलीप कुमार एवं आशीष काला परिवार तथा मंजू देवी-विमल-मुकेश-अमित काला परिवार को प्राप्त हुआ। पदमेश भरतपुर टीम के सुमधुर संगीत एवं भक्तिमय प्रस्तुतियों के बीच देव-शास्त्र-गुरु पूजा, समुच्चय चौबीस पूजा, सोलहकारण पूजा, पंचमेरु पूजा, दशधर्म पूजा, दशधर्म विधान पूजा एवं मूलनायक भगवान महावीर स्वामी की विशेष पूजा संपन्न हुई। श्रद्धालुओं ने भक्तिभाव से भगवान के समक्ष अर्घ्य समर्पित किए। आयोजन में श्रावक-श्राविकाओं के साथ बच्चों ने भी उत्साहपूर्वक भाग लेकर धर्मलाभ लिया। सायंकाल मंदिर परिसर में भव्य आरती, सामायिक एवं सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित किए गए। पूरे मंदिर परिसर में धार्मिक वातावरण के बीच भगवान महावीर के जयकारे गूंजते रहे। दशलक्षण महापर्व के प्रथम दिन श्रद्धालुओं ने उत्तम क्षमा धर्म की आराधना करते हुए क्रोध का त्याग, क्षमा का भाव एवं आत्मशुद्धि का संकल्प लिया। **-लालचंद पहाड़िया**

दिगंबर जैन धर्मावलंबियों के दसलक्षण पर्व प्रारंभ

प्रथम दिन उत्तम क्षमा धर्म की आराधना, जिनालयों में हुए अभिषेक-शांतिधारा

नसीराबाद (रोहित जैन)। दिगंबर जैन धर्मावलंबियों के दस दिवसीय दसलक्षण महापर्व का बुधवार को श्रद्धा एवं भक्तिभाव के साथ शुभारंभ हुआ। पर्व के प्रथम दिन समाज के अनेक धर्मावलंबियों ने व्रत एवं उपवास रखकर धर्म आराधना की। इस अवसर पर मुख्य बाजार स्थित श्री आदिनाथ दिगंबर जैन बड़ा मंदिर में प्रातःकाल कलशाभिषेक, शांतिधारा एवं दसलक्षण मंडल विधान का आयोजन किया गया। श्रद्धालुओं ने प्रथम दिन उत्तम क्षमा धर्म की अष्टद्रव्यों से विधिवत पूजा-अर्चना की। संध्याकाल मंदिर में सामूहिक महाआरती का आयोजन हुआ, जिसमें बड़ी संख्या में श्रद्धालुओं ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। इसी प्रकार नगर के अन्य जैन मंदिरों में भी कलशाभिषेक, शांतिधारा एवं दसलक्षण विधान के तहत पूजा-अर्चना की गई। धार्मिक अनुष्ठानों एवं मंत्रोच्चार से जिनालयों में दिनभर भक्तिमय वातावरण बना रहा। उत्तम क्षमा धर्म दसलक्षण धर्मों में प्रथम है। यह मनुष्य को क्रोध, द्वेष एवं वैमनस्य का त्याग कर क्षमाभाव अपनाने की प्रेरणा देता है। जैन दर्शन में आत्मशुद्धि एवं आध्यात्मिक उन्नति के लिए क्षमा को महत्वपूर्ण माना गया है। दसलक्षण महापर्व के दौरान श्रद्धालु दस धर्मों की आराधना करते हुए आत्मचिंतन, संयम एवं आत्मशुद्धि की साधना करेंगे।

अग्रवाल डायमंड पर महिला इंजीनियर्स, आर्किटेक्ट्स एवं इंटीरियर डिजाइनर्स का सम्मान

कोटा. शाबाश इंडिया

अग्रवाल डायमंड एंड गोल्ड शोरूम, चौपाटी बाजार में वूमेन इंजीनियर्स डे के अवसर पर विशेष सम्मान समारोह आयोजित किया गया। कार्यक्रम में शहर की महिला इंजीनियर्स, आर्किटेक्ट्स एवं इंटीरियर डिजाइनर्स ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। इस अवसर पर महिला प्रोफेशनल्स को दुपट्टा पहनाकर एवं पुरस्कार प्रदान कर सम्मानित किया गया। कार्यक्रम में महिलाओं के तकनीकी एवं रचनात्मक क्षेत्रों में योगदान की सराहना की गई। अग्रवाल डायमंड एंड गोल्ड की निदेशक माधुरी जैन सर्राफ एवं सुबाश्री जैन सर्राफ ने कहा कि महिलाओं ने इंजीनियरिंग, आर्किटेक्चर एवं इंटीरियर डिजाइनिंग के क्षेत्र में अपनी प्रतिभा, मेहनत एवं रचनात्मकता से विशेष पहचान बनाई है। ऐसे आयोजन उनके योगदान को सम्मान देने के साथ-साथ उन्हें आगे बढ़ने के लिए प्रोत्साहित करने का माध्यम हैं। इस अवसर पर अग्रवाल डायमंड एंड गोल्ड में चल रही डायमंड, गोल्ड एवं सिल्वर ज्वेलरी की विशेष प्रदर्शनी का कलेक्शन भी महिला इंजीनियर्स, आर्किटेक्ट्स एवं इंटीरियर डिजाइनर्स को दिखाया गया। प्रदर्शनी में सिंगापुर, बैंकॉक एवं इटली से आए विशेष कलेक्शन ने सभी का ध्यान आकर्षित किया। कार्यक्रम में उपस्थित महिला प्रतिभागियों ने सम्मान समारोह एवं विशेष ज्वेलरी प्रदर्शनी की सराहना करते हुए इसे सुंदर एवं प्रेरणादायक पहल बताया।

श्रद्धांजलि

हमारी प्रिय संरक्षक
श्रीमती कुसुम जी संघी
(धर्मपत्नी श्री उमरावमल जी संघी)
के स्वर्गवास पर हम सभी
भावपूर्ण श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं।

श्रद्धावनत
सखी गुलाबी नगरी
सारिका जैन — संस्थापक अध्यक्ष
सुषमा जैन — अध्यक्ष
ममता सेठी — सचिव
एवं समस्त सखी गुलाबी नगरी परिवार

माता-पिता की पुण्य स्मृति में चार व्हीलचेयर चिकित्सालय को भेंट

अजमेर (रोहित जैन)। राजकीय सेटेलाइट चिकित्सालय, आदर्श नगर, अजमेर में सामाजिक सरोकार से जुड़ा प्रेरणादायी कार्यक्रम आयोजित किया गया। श्रीमती भगवती पिपरवाल, सदस्य महावीर इंटरनेशनल अजमेर एवं सीनियर नर्सिंग ऑफिसर, जेएलएन चिकित्सालय, अजमेर ने अपने माता-पिता की पुण्य स्मृति में महावीर इंटरनेशनल अजमेर के माध्यम से चिकित्सालय को चार व्हीलचेयर भेंट कीं। इस अवसर पर महावीर इंटरनेशनल अजमेर के ट्रस्टी पदम चंद जैन, सदस्य एस.के. वर्मा, अध्यक्ष मनोज यादव एवं सदस्य अशोक डाबरिया उपस्थित रहे। कार्यक्रम में राजकीय सेटेलाइट चिकित्सालय, आदर्श नगर, अजमेर के अधीक्षक डॉ. जी.सी. मीणा, उपाधीक्षक, मेट्रन श्रीमती संध्या श्रीवास्तव, सीनियर नर्सिंग ऑफिसर श्रीमती अनीता मिश्रा, नर्सिंग ऑफिसर श्री सिद्धार्थ एवं श्री इरफान सहित चिकित्सालय का अन्य स्टाफ उपस्थित रहा। इस अवसर पर चिकित्सालय प्रशासन एवं समस्त स्टाफ की ओर से श्रीमती भगवती पिपरवाल एवं महावीर इंटरनेशनल अजमेर के प्रति आभार एवं धन्यवाद व्यक्त किया गया। यह सेवा कार्य मरीजों एवं उनके परिजनों की सुविधा में महत्वपूर्ण योगदान देगा तथा समाज में सेवा, सहयोग एवं मानवीय संवेदना की भावना को और मजबूत करेगा। श्रीमती भगवती पिपरवाल द्वारा अपने माता-पिता की पुण्य स्मृति को सेवा कार्य से जोड़ना समाज के लिए प्रेरणादायी एवं अनुकरणीय उदाहरण है।

तीये की बैठक

अत्यंत दुःख के साथ सूचित किया जाता है कि हमारी पूज्यनीय
श्रीमती कुसुम जी संघी
(धर्मपत्नी उमराव मल संघी)
का स्वर्गवास 13 सितम्बर 2026 को हो गया है।
तीये के बैठक गुरूवार दिनांक 17 सितम्बर 2026 को
प्रातः 11 बजे **भट्टारक जी की नसिया, जयपुर** में रखी गई है।

शोकाकुल
उमरावमल संघी (पति), इन्दर संघी (देवर)
नवीन-दीपाली संघी (पुत्र-पुत्रवधु)
कैलाश चन्द, श्रीमति संतोष देवी, जितेन्द्र, प्रेमचन्द, अलका, नरेन्द्र,
नीरा, संजय, राजेन्द्र, सतिन एवं समस्त संघी परिवार
डॉ. नीलिमा-विजय कोठारी (USA), रूचि- संदीप टोग्या (पुत्री- दामाद)
नमित-दिशिका (पौत्र-पुत्रवधु), भव्य (पौत्र), जीत, आशिका, नवन (दोहिता-दोहिती)
नेहल-तराश जैन (मालपुरा वाले), सरोज-राजेन्द्र जी बिलाला,
पुष्पा-ओम प्रकाश जी बोहरा (ननद-नन्दोई) प्रदीप-प्रमोद गोधा (भान्जे)
पीहर पक्षः राजेन्द्र, विजय, राजेश, संजय एवं समस्त छाबड़ा परिवार रेवासा वाले

Firm Vardhmaan Medicose PVT Ltd. | SDMH Campus Jaipur
Soni MRI Centre | B-6 Opposite Centre Park

दशलक्षण महापर्व के प्रथम दिन उत्तम क्षमा धर्म की पूजा

भैंसलाना (अर्पित जैन)

कस्बे सहित क्षेत्र के जैन मंदिरों में बुधवार से दशलक्षण महापर्व का शुभारंभ हुआ। महापर्व के प्रथम दिन प्रातःकाल श्रीजी का अभिषेक, शांतिधारा एवं विधि-विधान के साथ उत्तम क्षमा धर्म की पूजा-अर्चना की गई। इस दौरान श्रद्धालुओं ने भक्तिभाव से धार्मिक अनुष्ठानों में सहभागिता की। संध्याकाल मंदिरों में महाआरती का आयोजन किया गया। जैन समाज के राजकुमार पाटनी ने बताया कि दशलक्षण महापर्व का प्रथम दिन उत्तम क्षमा दिवस के रूप में मनाया जाता है। यह पर्व आत्मशुद्धि, त्याग एवं तपस्या का संदेश देता है। उत्तम क्षमा मनुष्य को क्रोध, द्वेष एवं वैमनस्य का त्याग कर क्षमाभाव अपनाने की प्रेरणा देती है। इस अवसर पर महावीरप्रसाद पाटनी, जिनेंद्र जैन, सुशील पाटनी, राकेश जैन, ललित जैन, सुभाष जैन, अरिहंत जैन एवं पंकज जैन सहित समाजजन उपस्थित रहे।

दशलक्षण महापर्व पर पोस्टर प्रतियोगिता आयोजित

जयपुर. शाबाश इंडिया

अखिल भारतीय श्रीमाल जैन जागृति संस्था द्वारा दशलक्षण महापर्व के पावन अवसर पर पोस्टर प्रतियोगिता का आयोजन किया गया, जो सफलतापूर्वक संपन्न हुई। संस्था के महासचिव डॉ. इन्द्र कुमार जैन ने बताया कि प्रतियोगिता का विषय ''अहिंसा से विश्व शांति'' एवं ''जिओ और जीने दो'' रखा गया था। इसमें 5 से 15 वर्ष तक की आयु के 20 बच्चों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। जयपुर सहित देशभर के श्रीमाल जैन परिवारों के बच्चों ने अपनी सुंदर कलाकृतियां प्रतियोगिता के लिए भेजीं। कार्यक्रम के संयोजक एवं कोषाध्यक्ष नवल जैन ने बताया कि निर्णायक मंडल द्वारा पोस्टरों का सूक्ष्म अवलोकन कर परिणाम घोषित किया जाएगा। चित्र संयोजन एवं रंग संयोजन के आधार पर विजेताओं का चयन किया जाएगा। प्रतियोगिता के पुरस्कारों के लिए कैलाश चंद, शिमला, अंकित,

कविता, अदिति, सौरभ, गुहिका, लविक, लक्षिका एवं मोक्षित जैन (चिरावण्डा वाले), प्रताप नगर, जयपुर परिवार द्वारा संस्था को सहयोग प्रदान किया गया। मुख्य समन्वयक

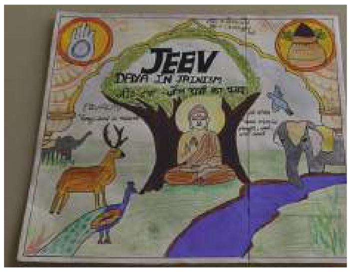

कैलाश चंद (चिरावण्डा वाले) ने सहयोगी परिवार का आभार व्यक्त किया। कार्यक्रम को सफल बनाने में महिला समन्वयकों श्रीमती पिंकी जैन, रेणु जैन, संगीता जैन, उर्मिला जैन, माया जैन, ऋतु जैन, समता जैन, चंचल जैन, अंजना जैन, अनीता जैन, नेहा जैन, प्रियंका जैन एवं प्रतिभा जैन का विशेष सहयोग रहा। अंत में संस्था के अध्यक्ष अजय कुमार जैन एवं पदाधिकारियों ने सभी प्रतिभागी बच्चों, अभिभावकों एवं सहयोगी कार्यकताओं का आभार व्यक्त किया।

दशलक्षण में पहले दिन भव्य अभिषेक के संग छाया भक्ति का रंग

आचार्य पुलकसागर महाराज के सान्निध्य में उत्तम क्षमा धर्म की आराधना, पाप नाशनम् शिविर में उमड़े श्रावक

भीलवाड़ा. शाबाश इंडिया। श्री पार्श्वनाथ दिगंबर जैन मंदिर ट्रस्ट, मेन सेक्टर, शास्त्रीनगर के तत्वावधान में सकल दिगंबर जैन समाज की ओर से भीलवाड़ा में पहली बार चातुर्मास कर रहे राष्ट्रसंत मनोज्ञाचार्य पुलकसागर जी महाराज ससंघ के सान्निध्य में दशलक्षण महापर्व की आराधना बुधवार से शास्त्रीनगर स्थित सूर्यमहल में विधि-विधान के साथ प्रारंभ हुई। महापर्व के प्रथम दिन उत्तम क्षमा धर्म की पूजा-अर्चना की गई। दशलक्षण पर्व के साथ ही दस दिवसीय 'पाप नाशनम्' शिविर का भी शुभारंभ हुआ, जिसमें 600 से अधिक श्रावक-श्राविकाएं शामिल होकर पर्युषण की धर्म आराधना कर रहे हैं। पहले दिन आचार्य पुलकसागर महाराज के सान्निध्य में भगवान पार्श्वनाथ का भव्य अभिषेक किया गया। चक्रवर्ती एवं इंद्र के रूप में श्रावकों ने अभिषेक किया तो ऐसा भक्तिमय नजारा बना, मानो सुमेरु पर्वत पर हजारों इंद्र भगवान पार्श्वनाथ का अभिषेक करने पहुंचे हों। श्रद्धालु कतारबद्ध होकर भगवान का अभिषेक करते रहे। भगवान की भक्ति में श्रावक-श्राविकाएं झूम उठे और भजनों पर नृत्य करते हुए भक्ति में लीन रहे। इस दौरान पार्श्वनाथ प्रभु की भक्ति में गरबा नृत्य भी किया गया। आचार्य पुलकसागर महाराज ने प्रथम दिवस संदेश देते हुए कहा कि क्रोध का अभाव होना ही उत्तम क्षमा धर्म है। क्रोध के बार-बार उपस्थित होने पर भी जो क्रोध नहीं करता, उसके भीतर क्षमा धर्म प्रकट होता है। क्षमा का अर्थ सहन करना और शांत करना है। क्षमा वास्तव में एक अलंकरण है, जो शत्रु या मित्र सभी के प्रति सहिष्णुता का पाठ पढ़ाता है। उन्होंने कहा कि क्षमा वीरों का आभूषण है। मन की गांठ खोलना ही क्षमा है। क्रोध पर अंकुश लगाने का उत्तम उपाय क्षमा धर्म है। क्रोध को पैदा ही नहीं होने देना चाहिए और यदि किसी कारणवश क्रोध आ जाए तो नम्रता से उसे विफल कर देना चाहिए। उत्तम क्षमा धर्म की आराधना का उद्देश्य सहनशीलता का विकास एवं सभी के प्रति क्षमाभाव रखना है।

क्षमा का दान ही सर्वश्रेष्ठ दान

चतुर्विध संघ में सौहार्द और आत्मीयता बनाए रखना क्षमापना का मर्म : युवाचार्य महेन्द्र ऋषिजी

भीलवाड़ा. शाबाश इंडिया। क्षमापना केवल परंपरा निभाने या कुछ शब्द दोहराने का अवसर नहीं, बल्कि मन की मलिनता हटाकर संबंधों में सहजता और आत्मीयता लौटाने की साधना है। क्षमा तभी सार्थक है, जब वह व्यवहार में दिखाई दे और मन में किसी के प्रति रही कटुता समाप्त करे। यह विचार श्रमणसंघीय युवाचार्य महेन्द्र ऋषिजी ने शांतिभवन में आयोजित विशाल सामूहिक क्षमापना कार्यक्रम में व्यक्त किए। उन्होंने कहा कि भगवान महावीर ने चतुर्विध संघ को धर्म-साधना का मार्ग दिया। क्षमापना उसी परंपरा में आपसी सौहार्द, सामंजस्य और मैत्री को मजबूत करने का अवसर है। मन, वचन अथवा व्यवहार से किसी को ठेस पहुंची हो तो क्षमा मांगना कमजोरी नहीं, बल्कि संबंधों के प्रति सम्मान का भाव है। ''क्षमा का दान ही आज सर्वश्रेष्ठ दान है,'' युवाचार्यश्री ने कहा। सांवत्सरिक समापन पर युवाचार्यश्री के साथ यशोदिप्ती मधुकंवरजी, उपप्रवर्तिनी दिव्यज्योतिजी, महासती सुचेताजी, स्मितभाषी पियुषदर्शनाजी, महासाध्वी ज्ञानकंवरजी सहित संत-साध्वीवृंद ने शांतिभवन श्रीसंघ तथा भीलवाड़ा के विभिन्न श्रीसंघों के पदाधिकारियों, प्रतिनिधियों, कार्यकर्ताओं एवं श्रावक-श्राविकाओं से सामूहिक क्षमायाचना की। उपस्थित समाजजनों ने हाथ जोड़कर युवाचार्यश्री एवं साध्वीवृंद के समक्ष क्षमाभाव व्यक्त किया तथा एक-दूसरे से गले मिलकर ''मिच्छामि दुक्कडम्'' कहते हुए परस्पर क्षमा मांगी। श्रीसंघ मंत्री नवरतनमल भलावत ने बताया कि कार्यक्रम में आनन्द अनुभूति चातुर्मास के संरक्षक नवरतनमल बंब, अध्यक्ष राजेन्द्रप्रसाद चीपड़, संयोजक कंवरलाल सूरिया, मदनलाल चौरड़िया, सुशील चपलोत, नरेन्द्र भंडारी, प्रकाश पीपाड़ा, महावीर युवक मंडल अध्यक्ष मनीष कोठारी, शांति जैन महिला मंडल अध्यक्ष सिम्मी पोखरना, चंदा कोठारी, पूर्व राष्ट्रीय महिला जैन कॉन्फ्रेंस अध्यक्ष पुष्पा गोखरू, चंदनबाला महिला मंडल की मंजू खटवड़, राजस्थान जैन कॉन्फ्रेंस के आनन्द चपलोत, जीतो के महावीरसिंह चौधरी, मीठूलाल सिंघवी एवं राजेन्द्र गोखरू, बीजीएस के अरविंद झामण, यशसिद्ध भवन के भूपेन्द्रसिंह पंगारिया एवं शिवसिंह पंगारिया, महावीर भवन बापूनगर के अनिल विस्लोत, महावीर भवन नाड़ी मोहल्ला के पारसमल कुकड़ा, साधुमार्गी संघ के बलवंत रांका, मंदिरमार्गी संघ के तेजसिंह नाहर, अम्बेश भवन के नवरतनमल सूरिया एवं चंचल पीपाड़ा, अरिहंत भवन के शांतिलाल खमेसरा, शास्त्रीनगर अहिंसा भवन के अजय सांड, न्यू आजादनगर के राजेश बाफना, श्रीसंघ चन्द्रशेखर आजादनगर के सुरेन्द्र चौरड़िया तथा सुभाषनगर के हेमंत कोठारी सहित विभिन्न श्रीसंघों के पदाधिकारी, प्रतिनिधि एवं सदस्य उपस्थित रहे। सभी ने सामूहिक क्षमापना में सहभागी बनकर 'मिच्छामि दुक्कडम्' कहा।

क्षमा शांति का दिव्य द्वार: पट्टाचार्य श्री विशुद्ध सागर जी महाराज

ऋषभोदय. शाबाश इंडिया

पर्वराज पर्युषण महापर्व के अवसर पर आयोजित ''श्रावक संस्कार संयम शिविर'' में क्षमा धर्म पर संबोधित करते हुए दिगंबर जैन धर्म के पट्टाचार्य श्री विशुद्ध सागर जी महाराज ने कहा कि वास्तविक पर्व वही है, जो आत्मा को पवित्र करे। जो कल्याणकारी पुण्य कार्यों की प्रेरणा दे और पुण्य का संवर्धन करे, वही पुण्यवर्धक पर्व कहलाता है। पर्व मनुष्य को नवीन ऊर्जा प्रदान करते हैं।

क्षमा शांति का दिव्य द्वार

आचार्य श्री ने कहा कि क्षमा अमृत है और शांति का परम द्वार है। क्षमा नीर है, जबकि क्रोध महाअग्नि के समान है। अग्नि में कोई झुलसना नहीं चाहता। इसी प्रकार क्रोधी व्यक्ति से उसके सगे-संबंधी भी दूर हो जाते हैं। इसलिए क्रोध से बचो और क्षमा धारण करो। क्रोध, मान और मायाचार से युक्त व्यक्ति अपना जीवन व्यर्थ कर देता है। उन्होंने कहा कि क्षमा आत्मशांति का मार्ग प्रशस्त करती है।

गुरु आशीष की छत्रछाया

उन्होंने कहा कि जिस प्रकार सिर पर छाया हो तो व्यक्ति धूप से बच जाता है, उसी प्रकार जिसके सिर पर गुरु का आशीर्वाद होता है, वह पापों से बचने का मार्ग प्राप्त करता है। मनुष्य के परिणाम ऐसे होने चाहिए, जो उसे अन्याय, क्रोध और पाप से बचाएं।

अर्थ ही अनर्थ की जड़

आचार्य श्री ने कहा कि क्रोध और मान मनुष्य के लिए अत्यंत घातक हैं। अर्थ अर्थात धन ही अनेक अनर्थों का कारण बनता है। मनुष्य जितना अधिक संग्रह करता जाता है, उतनी ही उसकी अशांति बढ़ती जाती है। संसार में जितने अनर्थ हो रहे हैं, हुए हैं और भविष्य में होंगे, उनमें धन की आसक्ति एक प्रमुख कारण है। इसलिए धन का सदुपयोग करते हुए जीवन को धर्म और संयम से जोड़ना चाहिए।

धर्म में दया क्यों?

उन्होंने कहा कि जो दया और करुणा से युक्त है, वही सच्चा धर्म है। धर्म का आधार जीवों के प्रति दया, करुणा और अहिंसा है। दयाशील व्यक्ति करुणा के मर्म को समझते हुए जीवन को सार्थक बनाता है। क्षमा महान है, क्षमा ही धर्म है और क्षमा ही आत्मा का स्वभाव है। क्षमा मनुष्य को वैर-विरोध और दंड की भावना से ऊपर उठाती है।

क्षमा वीरस्य भूषणम्

आचार्य श्री ने कहा कि ''क्षमा वीरस्य भूषणम्'' अर्थात क्षमा वीरों का आभूषण है। क्षमा शत्रुता का नाश करती है। जो व्यक्ति क्षमा धारण करता है, वही वास्तविक अर्थों में वीर कहलाता है। क्षमा करना कमजोरी नहीं, बल्कि आत्मबल और संयम का परिचायक है। क्षमा भाव के माध्यम से मनुष्य अपने भीतर की कटुता और वैरभाव को समाप्त कर सकता है।

पंचाचार धर्म का महत्व

उन्होंने कहा कि पंचेंद्रियों पर संयम रखते हुए जो धर्म का पालन किया जाता है, वही सच्चे धर्म की दिशा में ले जाता है। पापों का क्षय, परस्पर प्रेम और दूसरों के द्वारा उत्पन्न दुखों का निवारण, हितोपदेश, शील-संयम तथा तपस्या में सहायक आचरण ही धर्म को सार्थक बनाते हैं। जो आचरण परस्पर प्रेम बढ़ाए और आत्मकल्याण का मार्ग प्रशस्त करे, वही धर्म है। धर्म में पाप का कोई स्थान नहीं है।

श्री अभिषेक अशोक पाटील
कार्याध्यक्ष,
अखिल भारतवर्षीय दिगंबर जैन युवा परिषद, कोल्हापुर

क्षमा शांति का दिव्य द्वार : पट्टाचार्य श्री विशुद्ध सागर जी महाराज

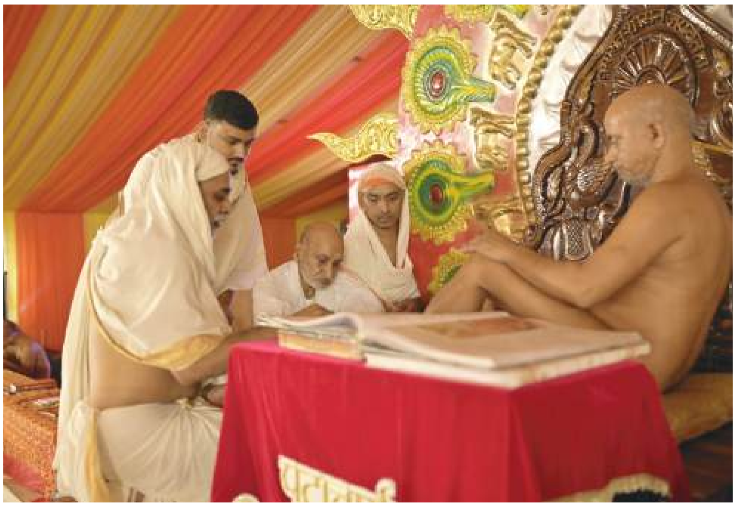

ऋषभोदय. शाबाश इंडिया

पर्वराज पर्युषण महापर्व के अवसर पर आयोजित ''श्रावक संस्कार संयम शिविर'' में क्षमा धर्म पर संबोधित करते हुए दिगंबर जैन धर्म के पट्टाचार्य श्री विशुद्ध सागर जी महाराज ने कहा कि वास्तविक पर्व वही है, जो आत्मा को पवित्र करे। जो कल्याणकारी पुण्य कार्यों की प्रेरणा दे और पुण्य का संवर्धन करे, वही पुण्यवर्धक पर्व कहलाता है। पर्व मनुष्य को नवीन ऊर्जा प्रदान करते हैं।

क्षमा शांति का दिव्य द्वार

आचार्य श्री ने कहा कि क्षमा अमृत है और शांति का परम द्वार है। क्षमा नीर है, जबकि क्रोध महाअग्नि के समान है। अग्नि में कोई झुलसना नहीं चाहता। इसी प्रकार क्रोधी व्यक्ति से उसके सगे-संबंधी भी दूर हो जाते हैं। इसलिए क्रोध से बचो और क्षमा धारण करो। क्रोध, मान और मायाचार से युक्त व्यक्ति अपना जीवन व्यर्थ कर देता है। उन्होंने कहा कि क्षमा आत्मशांति का मार्ग प्रशस्त करती है।

गुरु आशीष की छत्रछाया

उन्होंने कहा कि जिस प्रकार सिर पर छाया हो तो व्यक्ति धूप से बच जाता है, उसी प्रकार जिसके सिर पर गुरु का आशीर्वाद होता है, वह पापों से बचने का मार्ग प्राप्त करता है। मनुष्य के परिणाम ऐसे होने चाहिए, जो उसे अन्याय, क्रोध और पाप से बचाएं।

अर्थ ही अनर्थ की जड़

आचार्य श्री ने कहा कि क्रोध और मान मनुष्य के लिए अत्यंत घातक हैं। अर्थ अर्थात धन ही अनेक अनर्थों का कारण बनता है। मनुष्य जितना अधिक संग्रह करता जाता है, उतनी ही उसकी अशांति बढ़ती जाती है। संसार में जितने अनर्थ हो रहे हैं, हुए हैं और भविष्य में होंगे, उनमें धन की आसक्ति एक प्रमुख कारण है। इसलिए धन का सदुपयोग करते हुए जीवन को धर्म और संयम से जोड़ना चाहिए।

धर्म में दया क्यों?

उन्होंने कहा कि जो दया और करुणा से युक्त है, वही सच्चा धर्म है। धर्म का आधार जीवों के प्रति दया, करुणा और अहिंसा है। दयाशील व्यक्ति करुणा के मर्म को समझते हुए जीवन को सार्थक बनाता है। क्षमा महान है, क्षमा ही धर्म है और क्षमा ही आत्मा का स्वभाव है। क्षमा मनुष्य को वैर-विरोध और दंड की भावना से ऊपर उठाती है।

क्षमा वीरस्य भूषणम्

आचार्य श्री ने कहा कि ''क्षमा वीरस्य भूषणम्'' अर्थात क्षमा वीरों का आभूषण है। क्षमा शत्रुता का नाश करती है। जो व्यक्ति क्षमा धारण करता है, वही वास्तविक अर्थों में वीर कहलाता है। क्षमा करना कमजोरी नहीं, बल्कि आत्मबल और संयम का परिचायक है। क्षमा भाव के माध्यम से मनुष्य अपने भीतर की कटुता और वैरभाव को समाप्त कर सकता है।

पंचाचार धर्म का महत्व

उन्होंने कहा कि पंचेंद्रियों पर संयम रखते हुए जो धर्म का पालन किया जाता है, वही सच्चे धर्म की दिशा में ले जाता है। पापों का क्षय, परस्पर प्रेम और दूसरों के द्वारा उत्पन्न दुखों का निवारण, हितोपदेश, शील-संयम तथा तपस्या में सहायक आचरण ही धर्म को सार्थक बनाते हैं। जो आचरण परस्पर प्रेम बढ़ाए और आत्मकल्याण का मार्ग प्रशस्त करे, वही धर्म है। धर्म में पाप का कोई स्थान नहीं है।

श्री अभिषेक अशोक पाटील
कार्याध्यक्ष, अखिल भारतवर्षीय दिगंबर जैन युवा परिषद, कोल्हापुर

दशलक्षण महापर्व के प्रथम दिन हुई उत्तम क्षमा धर्म की आराधना

जैन मंदिरों में अभिषेक, शांतिधारा व पूजन, बगीची में हुए मंगल प्रवचन, संगममति माताजी ने कहा—क्षमा मन को शांत कर आत्मशुद्धि का मार्ग दिखाती है। गुरु भक्ति, प्रश्न मंच व संस्कृत कार्यक्रम में श्रद्धालुओं ने लिया धर्मलाभ

अंबाह. शाबाश इंडिया। दशलक्षण महापर्व के प्रथम दिन बुधवार को जैन समाज द्वारा उत्तम क्षमा धर्म की आराधना श्रद्धा, भक्ति एवं धार्मिक उत्साह के साथ की गई। परम पूज्य गुरु मां गणिनी आर्यिका रत्न 105 श्री संगममति माताजी के पावन सान्निध्य में दिनभर विभिन्न धार्मिक एवं आध्यात्मिक आयोजन हुए। सुबह से ही जैन मंदिरों में श्रद्धालुओं की आवाजाही शुरू हो गई थी। मंदिरों में भगवान का अभिषेक, शांतिधारा एवं विधि-विधानपूर्वक पूजन किया गया। इस दौरान मंदिर परिसर भगवान के जयकारों और धार्मिक भजनों से गूंजते रहे। जैन बगीची में आयोजित संगीतमय पूजन में नरेंद्र म्यूजिक पार्टी, भिंड ने भक्ति गीतों एवं धार्मिक धुनों के साथ श्रद्धालुओं को पूजा कराई। बड़ी संख्या में समाजजन परिवार सहित पहुंचे और धार्मिक क्रियाओं में सहभागिता की। अभिषेक एवं शांतिधारा के दौरान श्रद्धालुओं ने भगवान के समक्ष सुख-शांति एवं आत्मकल्याण की भावना से पूजा-अर्चना की।

क्षमा मन को शांत कर आत्मशुद्धि का मार्ग दिखाती है

इसके बाद जैन बगीची में गणिनी आर्यिका रत्न 105 श्री संगममति माताजी के मंगल प्रवचन हुए। माताजी ने दशलक्षण महापर्व के प्रथम दिन मनाए जाने वाले उत्तम क्षमा धर्म की वर्तमान जीवन में उपयोगिता समझाते हुए कहा कि क्षमा केवल किसी दूसरे की गलती को माफ कर देने का नाम नहीं है, बल्कि अपने भीतर उत्पन्न होने वाले क्रोध और वैरभाव को समाप्त करने का अभ्यास भी है। उन्होंने कहा कि मनुष्य जब क्रोध के वशीभूत होता है तो स्वयं के साथ-साथ दूसरों को भी दुख पहुंचाता है। इसके विपरीत क्षमा का भाव मन को शांत करता है और आत्मा को निर्मल बनाने की दिशा में ले जाता है। माताजी ने कहा कि परिवार, समाज और कार्यस्थल पर छोटी-छोटी बातों को लेकर मन में नाराजगी रखने के बजाय क्षमा का भाव अपनाना चाहिए। कई बार व्यक्ति सामने वाले की गलती को बड़ा मान लेता है, लेकिन अपनी गलती को देखने का प्रयास नहीं करता। उत्तम क्षमा धर्म हमें पहले स्वयं के भीतर झांकने और अपने दोषों को पहचानने की प्रेरणा देता है। उन्होंने कहा कि दशलक्षण महापर्व केवल पूजा-पाठ और धार्मिक आयोजनों तक सीमित नहीं है। इन दस धर्मों को अपने आचरण में उतारना ही पर्व की वास्तविक सार्थकता है। माताजी ने श्रद्धालुओं को क्रोध पर नियंत्रण रखने, किसी के प्रति द्वेष नहीं रखने तथा मन में क्षमा का भाव विकसित करने का संदेश दिया। प्रवचन के दौरान बड़ी संख्या में श्रद्धालु उपस्थित रहे।

गुरु भक्ति, प्रश्न मंच एवं संस्कृत कार्यक्रम

शाम को जैन बगीची में गुरु भक्ति का आयोजन किया गया। श्रद्धालुओं ने भक्तिभाव के साथ माताजी की आराधना की। इसके बाद माताजी द्वारा प्रश्न मंच आयोजित किया गया, जिसमें समाजजनों ने धार्मिक विषयों से संबंधित अपनी जिज्ञासाएं रखीं और माताजी ने उनका समाधान किया। रात्रि में संस्कृत कार्यक्रम का आयोजन हुआ, जिसमें बच्चों एवं युवाओं ने धार्मिक एवं सांस्कृतिक प्रस्तुतियां देकर सभी का मन मोह लिया। दशलक्षण महापर्व के प्रथम दिन पूरे अंबाह में धार्मिक वातावरण बना रहा। समाजजनों ने उत्तम क्षमा धर्म की आराधना करते हुए अपने जीवन में क्षमा, संयम एवं आत्मशुद्धि के भाव को अपनाने का संकल्प लिया। आयोजन में सकल दिगंबर जैन समाज एवं चातुर्मास कमेटी, अंबाह के पदाधिकारी एवं सदस्य व्यवस्थाओं में जुटे रहे।

साहित्यकार अनिल माथुर प्रशस्ति पत्र से सम्मानित

जोधपुर. शाबाश इंडिया। वैदिक साहित्य प्रकाशन, हरिद्वार द्वारा प्रकाशित पुस्तक ''अफ्रीका के गांधी–नेल्सन मंडेला'' में जोधपुर निवासी साहित्यकार अनिल माथुर के लेख 'नेल्सन मंडेला–संघर्ष, समानता और क्षमा के महानायक' को स्थान दिया गया है। इस उल्लेखनीय साहित्यिक योगदान के लिए प्रकाशन संस्था की ओर से माथुर को प्रशस्ति पत्र प्रदान कर सम्मानित किया गया। माथुर ने अपने लेख में दक्षिण अफ्रीका के महान नेता नेल्सन मंडेला के संघर्षपूर्ण जीवन, रंगभेद के विरुद्ध उनके लंबे आंदोलन, समानता के प्रति उनकी प्रतिबद्धता तथा प्रतिशोध के स्थान पर क्षमा और सद्भाव को अपनाने की भावना को प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत किया है। साहित्य के क्षेत्र में सक्रिय अनिल माथुर लंबे समय से विभिन्न समाचार-पत्रों एवं पुस्तकों के लिए लेखन कर रहे हैं। सामाजिक सरोकारों, मानवीय मूल्यों, राष्ट्रभक्ति, साहित्य और समाज से जुड़े विषयों पर उनके लेख नियमित रूप से प्रकाशित होते रहे हैं। उनके लेखों को विभिन्न पुस्तकों में भी स्थान मिल चुका है। माथुर को इससे पूर्व भी देश-विदेश की विभिन्न साहित्यिक एवं सामाजिक संस्थाओं द्वारा उनके साहित्यिक योगदान के लिए सम्मानित किया जा चुका है। उनके इस नवीन साहित्यिक सम्मान पर साहित्यकारों, सामाजिक संस्थाओं एवं शुभचिंतकों ने प्रसन्नता व्यक्त करते हुए उन्हें बधाई दी।

एसएफएस दिगंबर जैन मंदिर में ध्वजारोहण के साथ शुरू हुआ दशलक्षण महापर्व

जयपुर. शाबाश इंडिया

श्री आदिनाथ दिगंबर जैन मंदिर, एसएफएस, राजावत फार्म, मानसरोवर में मंगलमय शांतिधारा एवं ध्वजारोहण के साथ दशलक्षण महापर्व का शुभारंभ हुआ। दशलक्षण महापर्व 16 सितंबर से 25 सितंबर तक श्रद्धा एवं भक्तिभाव के साथ मनाया जाएगा। महापर्व के प्रथम दिन बुधवार को प्रातः 6:30 बजे अभिषेक, प्रथम अभिषेक एवं शांतिधारा की धार्मिक क्रियाएं संपन्न हुईं। वेदी में विराजमान भगवान आदिनाथ की प्रथम अभिषेक एवं शांतिधारा राजेश, इंदु, मोहित एवं पलाश जैन ने की। वहीं, पांडुक शिला पर विराजमान भगवान शांतिनाथ की शांतिधारा सौभागमल-अंजना, राहुल-नीता, राजीव-नवीना, रवि-शिप्रा, युग, खुशी, सावी, ताशी एवं आत्मिका सहित समस्त कासलीवाल परिवार द्वारा की गई। इसके पश्चात ध्वजारोहण सुमति, प्रकाश, मंजू, सत्येंद्र, सीमा, रचित एवं काला द्वारा किया गया। दीप प्रज्वलन जयकुमार, रेणु, प्रतीक, ज्योति एवं प्रणल पाटोदी ने किया। वहीं, कलश स्थापना लीला, अरविंद एवं अंजू पाटनी, सुमेर नगर द्वारा की गई। सभी धार्मिक क्रियाएं स्वाध्याय मंडल के अध्यक्ष कैलाशचंद जैन, मिलापचंद जैन एवं कमलचंद टोंगिया के निर्देशन में संपन्न करवाई गईं।

उत्तम क्षमा धर्म की आराधना के साथ विधान मंडल पूजा

प्रातः 8:30 बजे उत्तम क्षमा धर्म की विधान मंडल पूजा प्रारंभ हुई। सौधर्म इंद्र नरेंद्र-कुसुम, अंकुर-नेहा एवं प्रत्यूष चांदवाड़, सुंदर नगर द्वारा मंगल कलश स्थापना के साथ विधान मंडल पूजा का शुभारंभ किया गया। समिति के अध्यक्ष कमलेशचंद जैन, महामंत्री सौभागमल जैन, मंत्री सुरेंद्र पाटनी, लालचंद झांझरी, रजनीकांत एवं मनोज लुहाड़िया तथा महिला मंडल अध्यक्ष उर्मिला पाटनी एवं मंत्री आशा बाकलीवाल ने सभी अतिथियों का तिलक, माला एवं साफा पहनाकर स्वागत किया।

अनंत अंबानी ने किया वादा पूरा

रिलायंस फाउंडेशन ने तिरुमला को सौंपीं 25 इलेक्ट्रिक बसें

तिरुमला. शाबाश इंडिया। तिरुमला आने वाले लाखों श्रद्धालुओं की यात्रा को अधिक आरामदायक और पर्यावरण-अनुकूल बनाने के उद्देश्य से रिलायंस फाउंडेशन ने तिरुमला तिरुपति देवस्थानम (टीटीडी) को 25 इलेक्ट्रिक बसें सौंपी हैं। इन बसों के लिए अलग ईवी चार्जिंग स्टेशन भी तैयार किया गया है। आंध्र प्रदेश के मुख्यमंत्री एन. चंद्रबाबू नायडू ने बसों को हरी झंडी दिखाकर रवाना किया। नई इलेक्ट्रिक बसों से हर साल तिरुमला आने वाले लाखों श्रद्धालुओं को पर्यावरण-अनुकूल परिवहन का एक और विकल्प मिलेगा। इसके साथ ही पेट्रोल-डीजल से संचालित वाहनों पर निर्भरता कम करने में भी मदद मिलेगी। यह सौगात ऐसे समय में मिली है, जब तिरुमला में ब्रह्मोत्सव का आयोजन चल रहा है और बड़ी संख्या में श्रद्धालु पहुंच रहे हैं। रिलायंस इंडस्ट्रीज के एग्जीक्यूटिव डायरेक्टर अनंत अंबानी ने जून 2026 में अपनी तिरुमला यात्रा के दौरान तिरुमला तिरुपति देवस्थानम को 25 इलेक्ट्रिक बसें देने का वादा किया था। करीब तीन महीने बाद रिलायंस फाउंडेशन ने अपना यह वादा पूरा कर दिया। इन बसों के लिए चार्जिंग सुविधा तैयार करने में जियो-बीपी ने तकनीकी सहयोग प्रदान किया है। अनंत अंबानी ने कहा, ''हर साल लाखों श्रद्धालु भगवान वेंकटेश्वर के दर्शन के लिए तिरुमला आते हैं। उनकी यात्रा को ज्यादा आरामदायक बनाने में सहयोग करना सौभाग्य और जिम्मेदारी दोनों है। ये 25 इलेक्ट्रिक बसें टीटीडी की उन कोशिशों में हमारा छोटा-सा योगदान हैं, जिनका मकसद तिरुमला की तीर्थयात्रा को और आरामदायक बनाना और क्षेत्र की समृद्ध जैव-विविधता को बचाना है।''

महेश कोचिंग सेंटर में रक्तदान शिविर आयोजित

जयपुर. शाबाश इंडिया

टोंक फाटक, प्रताप नगर प्रथम स्थित महेश कोचिंग सेंटर में सभी श्याम प्रेमियों एवं स्वास्थ्य कल्याण ब्लड बैंक के सहयोग से रक्तदान शिविर आयोजित किया गया। शिविर में रक्तदाताओं ने स्वेच्छा से रक्तदान कर सामाजिक सरोकार का परिचय दिया। इस अवसर पर स्वास्थ्य कल्याण ग्रुप के चेयरमैन डॉ. एस.एस. अग्रवाल ने स्वैच्छिक रक्तदान के महत्व पर प्रकाश डालते हुए कहा कि रक्तदान जरूरतमंद मरीजों के जीवन को बचाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। शिविर संयोजक श्याम माहेश्वरी ने बताया कि परम श्रद्धेय भक्त शिरोमणि श्यामलिन श्रीमती आनंदी देवी सारदा (मैया जी) के अवतरण दिवस के अवसर पर यह रक्तदान शिविर प्रतिवर्ष आयोजित किया जाता है। शिविर आयोजक विनीत अग्रवाल ने बताया कि शिविर में कुल 25 यूनिट रक्त एकत्र किया गया। आयोजन में श्याम प्रेमियों एवं रक्तदाताओं ने उत्साहपूर्वक सहभागिता की।

हिंदी पखवाड़े के तहत सुबोध पब्लिक स्कूल में हिंदी की गूंज

पखवाड़े के दौरान विद्यार्थियों के लिए दोहा वाचन, हिंदी लेखन, नुक्कड़ नाटक, ऑनलाइन क्विज, हिंदी प्रार्थना सभा, कविता वाचन, बुकमार्क गतिविधि तथा हिंदी प्रचार रैली सहित अनेक कार्यक्रम आयोजित किए गए।

जयपुर. शाबाश इंडिया

सुबोध पब्लिक स्कूल, रामबाग में हिंदी पखवाड़ा (1 से 14 सितंबर) उत्साह, उल्लास और रचनात्मकता के साथ मनाया गया। कक्षा 1 से 10 तक के विद्यार्थियों ने विभिन्न गतिविधियों में उत्साहपूर्वक भाग लेकर हिंदी भाषा के प्रति अपने प्रेम और रुचि को अभिव्यक्त किया। पखवाड़े के दौरान विद्यार्थियों के लिए दोहा वाचन, हिंदी लेखन, नुक्कड़ नाटक, ऑनलाइन क्विज, हिंदी प्रार्थना सभा, कविता वाचन, बुकमार्क गतिविधि तथा हिंदी प्रचार रैली सहित अनेक कार्यक्रम आयोजित किए गए। विद्यार्थियों एवं शिक्षकों ने विद्यालय के विभिन्न सूचना-पट्टों पर हिंदी में लेखन कर भाषा के प्रति जागरूकता का संदेश दिया। नुक्कड़ नाटक और कविता वाचन के माध्यम से विद्यार्थियों ने अपनी अभिनय एवं अभिव्यक्ति क्षमता का प्रदर्शन किया। ऑनलाइन क्विज के माध्यम से विद्यार्थियों के हिंदी ज्ञान को रोचक ढंग से परखा गया। पखवाड़े के दौरान प्रधानाचार्य डॉ. संजय पाराशर एवं संयोजक आलोक कुमार बम्ब के साक्षात्कार भी आयोजित किए गए। इनके माध्यम से विद्यार्थियों को उनके अनुभवों, विचारों एवं ज्ञान को समझने का अवसर मिला। साथ ही विद्यार्थियों को यह सीख मिली कि जीवन में सफलता प्राप्त करने के लिए निरंतर अभ्यास, अनुशासन और सकारात्मक सोच आवश्यक है। पखवाड़े के अंतिम दिन विद्यालय के सभी शिक्षकों को हिंदी में तैयार किए गए बुकमार्क भेंट किए गए। हिंदी पखवाड़े के दौरान आयोजित विभिन्न गतिविधियों ने विद्यार्थियों में हिंदी के प्रति प्रेम, रचनात्मकता, आत्मविश्वास एवं अभिव्यक्ति-कौशल को बढ़ावा दिया। कार्यक्रमों के माध्यम से यह संदेश भी दिया गया कि हिंदी केवल एक भाषा नहीं, बल्कि हमारी भावनाओं और अभिव्यक्ति का सशक्त माध्यम है।

दशलक्षण महापर्व विश्व शांति का आधारः आचार्य विमर्श सागर

उत्तम मार्दव धर्म पर मान कषाय त्यागने का संदेश, उपासक धर्म संस्कार शिविर में 350 शिविरार्थी शामिल

तिजारा. शाबाश इंडिया। दशलक्षण महापर्व के अवसर पर देहरा, तिजारा में आयोजित धर्मसभा में दिगंबराचार्य भावलिंगी संत श्री विमर्श सागर जी महाराज ने उत्तम मार्दव धर्म की व्याख्या करते हुए श्रद्धालुओं को मान एवं अहंकार का त्याग कर विनम्रता अपनाने का संदेश दिया। आचार्य श्री ने कहा कि मृदुता का भाव ही उत्तम मार्दव धर्म है। मान कषाय के कारण आत्मा में कठोरता उत्पन्न हो जाती है। जिस प्रकार कठोर भूमि पर श्रेष्ठ बीज भी नष्ट हो जाता है, उसी प्रकार अहंकार से कठोर हुआ मन आत्मिक गुणों के विकास में बाधक बनता है। मंदिर अध्यक्ष मुकेश जैन एवं प्रचार मंत्री उमंग जैन ने बताया कि आचार्य श्री ने कहा कि दशलक्षण महापर्व आत्मशुद्धि एवं आत्मचिंतन का पर्व है। इसके माध्यम से व्यक्ति अपने जीवन में धर्म के गुणों को धारण कर सकता है। महापर्व के दौरान उपासक धर्म संस्कार शिविर का आयोजन भी किया जा रहा है, जिसमें करीब 350 शिविरार्थी भाग ले रहे हैं। शिविर में धर्म, संस्कार एवं जैन सिद्धांतों से संबंधित प्रशिक्षण दिया जा रहा है। इस अवसर पर मंदिर अध्यक्ष मुकेश जैन, महामंत्री नरेंद्र जैन, कोषाध्यक्ष शिंभू जैन, प्रचार मंत्री उमंग जैन, चातुर्मास अध्यक्ष सुरेश जैन सहित अमन जैन, शैलू जैन, रवि जैन (पेट्रोल पंप वाले), नीरज जैन, सुरेंद्र जैन, प्रवीण जैन, टोनी जैन एवं अंशुल जैन सहित समाज के अनेक श्रद्धालु उपस्थित रहे।

संस्थान परिवार ने अनुशास्ता आचार्य श्री महाश्रमण से की सामूहिक क्षमायाचना

मनोमालिन्य त्यागें, क्षमा को जीवन में उतारें : प्रो. दूगड़

शरद जैन सुधांशु

लाडनूं। क्षमायाचना के पावन पर्व पर जैन विश्व भारती संस्थान के सभी सदस्यों ने कुलपति प्रो. बच्छराज दूगड़ के नेतृत्व में संस्थान के अनुशास्ता आचार्य श्री महाश्रमण जी से सामूहिक क्षमायाचना की। इस अवसर पर संस्थान के कुलपति प्रो. बच्छराज दूगड़ ने अध्यक्षीय उद्बोधन में कहा कि यह पर्व केवल जैन धर्म के अनुयायियों के लिए ही नहीं, बल्कि संपूर्ण मानव समुदाय की आत्मशुद्धि के लिए भी महत्वपूर्ण है। उन्होंने कहा कि हमें केवल उन लोगों से ही क्षमा नहीं मांगनी चाहिए, जिनके प्रति हमारे मन में राग-द्वेष की भावना है, बल्कि जिनसे हमारा अत्यधिक प्रेम है, उनसे भी क्षमा याचना करनी चाहिए। आज के दिन मन में किसी के प्रति कोई मनोमालिन्य न रखते हुए एक-दूसरे से क्षमा मांगने के साथ उदार भावना रखते हुए परस्पर क्षमा भी करनी चाहिए। तत्पश्चात शिक्षा विभाग के विभागाध्यक्ष प्रो. बी.एल. जैन ने पर्युषण महापर्व 2026 के अंतर्गत विभिन्न दिवसों पर आयोजित गतिविधियों के बारे में अपने विचार व्यक्त किए तथा सभी से क्षमायाचना की। प्राकृत एवं संस्कृत विभाग के विभागाध्यक्ष प्रो. जिनेंद्र कुमार जैन ने भी क्षमापना दिवस की महत्ता पर प्रकाश डालते हुए अपने विभाग की ओर से क्षमा याचना की। कार्यक्रम में संस्थान के ओएसडी प्रो. अशोक जैतावत, जैन एवं तुलनात्मक धर्म तथा दर्शन विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ. रामदेव साहू, योग एवं जीवन विज्ञान विभाग के विभागाध्यक्ष प्रो. युवराज सिंह खंगारोत, अहिंसा एवं शांति विभाग की विभागाध्यक्ष प्रो. वंदना कुंडलिया, आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ. रविंद्र सिंह राठौड़, कुलसचिव देवाशीष गोस्वामी, वित्ताधिकारी ऋषभ भूतोड़िया, उपकुलसचिव दीपाराम खोजा एवं अभिनव स्वरूप सक्सेना, सहायक कुलसचिव पंकज भटनागर सहित शैक्षणिक एवं गैर-शैक्षणिक सदस्य तथा विद्यार्थी उपस्थित रहे। कार्यक्रम का संचालन अहिंसा एवं शांति विभाग की सहायक आचार्य डॉ. लिपि जैन ने किया। उन्होंने भी इस अवसर पर अपने विचार व्यक्त करते हुए क्षमायाचना के महत्व पर प्रकाश डाला। अंत में विभाग के डॉ. बलबीर सिंह ने विद्यार्थियों एवं सभागार में उपस्थित सभी सदस्यों के प्रति आभार ज्ञापित किया।

मुनिसुव्रतनाथ दिगंबर जैन मंदिर में भव्य भक्ति संध्या

जयपुर. शाबाश इंडिया। दशलक्षण महापर्व के प्रथम दिन श्री 1008 मुनिसुव्रतनाथ दिगंबर जैन मंदिर, कल्याण नगर, टोंक रोड पर भव्य भजन संध्या का आयोजन किया गया। इस अवसर पर मंदिर परिसर भक्तिमय वातावरण से सराबोर हो गया। मंदिर कमेटी के मंत्री दिनेश धाड़का ने बताया कि भजन गायिका प्रिया जैन ने मनमोहक भजनों की प्रस्तुतियां देकर उपस्थित समाजजनों एवं अतिथियों को भक्ति रस में सराबोर कर दिया। भजनों पर श्रद्धालु भक्तिभाव से झूमते नजर आए।

बच्चों को मिली डिजिटल शिक्षा की नई उड़ान

चाकसू. शाबाश इंडिया। मानव सेवा ट्रस्ट राजस्थान द्वारा बच्चों की शिक्षा एवं डिजिटल साक्षरता को बढ़ावा देने के उद्देश्य से राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय, वार्ड 13, चाकसू में 5 कंप्यूटर एवं 1 प्रिंटर उपलब्ध कराए गए। इस पहल का उद्देश्य विद्यार्थियों को आधुनिक तकनीक से जोड़ना तथा उन्हें कंप्यूटर शिक्षा एवं डिजिटल कौशल से सशक्त बनाना है। ट्रस्ट के प्रबंध निदेशक कौशल सत्यार्थी ने कहा कि आज के डिजिटल युग में कंप्यूटर शिक्षा प्रत्येक बच्चे के उज्ज्वल भविष्य के लिए आवश्यक है। हमारा प्रयास है कि जरूरतमंद बच्चों को भी आधुनिक शिक्षा एवं तकनीकी संसाधनों का लाभ मिल सके। स्वास्थ्य कल्याण होम्योपैथिक मेडिकल कॉलेज एवं रिसर्च सेंटर के वरिष्ठ होम्योपैथ, आचार्य एवं चिकित्सक तथा ट्रस्ट सदस्य और मीडिया प्रभारी प्रो. डॉ. राजीव सक्सेना ने कहा कि यह सहयोग विद्यार्थियों के लिए अत्यंत उपयोगी सिद्ध होगा। कंप्यूटर एवं प्रिंटर का उचित उपयोग बच्चों की शिक्षा, तकनीकी ज्ञान एवं कौशल विकास के लिए किया जाएगा। यह पहल बच्चों को डिजिटल रूप से सशक्त बनाने और उनके उज्ज्वल भविष्य के निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगी। महासचिव श्रीमती दुर्गा वर्मा ने कहा कि इन कंप्यूटरों का नियमित एवं प्रभावी उपयोग बच्चों को कंप्यूटर प्रशिक्षण और डिजिटल साक्षरता प्रदान करने के लिए किया जाएगा। हमारा उद्देश्य केवल संसाधन उपलब्ध कराना नहीं, बल्कि बच्चों के भविष्य निर्माण में इन संसाधनों का वास्तविक उपयोग सुनिश्चित करना है। इस अवसर पर नोडल अधिकारी श्रीमती रीना हाड़ा, श्रीमती बिमला वर्मा, अनू वर्मा, कमलेश रैगर, स्वाति पंजवानी, प्रकाशी मीना, भास्कर, नीतेश सहित विद्यालय के समस्त शिक्षकगण उपस्थित रहे।